

CONNECT WITH US: 6 ()

Fax: +91 120 4686401 | customercare@bodycarecreations.com | SHOP ONLINE: www.ebodycare.in | For Trade Enquiries: +91-9899241782 | hkjaiswal@bodycarecreations.com



Manufactured & Marketed by : **BODYCARE CREATIONS LTD.** :- D-30, Sector - 63, Noida, UP - 201301, India | **Tel**: +91 120 4686400 | **CUSTOMER CARE**: +91 120 4278669 Fax: +91 120 4686401 | customercare@bodycarecreations.com | SHOP ONLINE: www.ebodycare.in | For Trade Enquiries: +91-9899241782 | hkjaiswal@bodycarecreations.com







Mkt. by: Bodycare International Ltd.

info@bodycareapparels.com | www.bodycareapparels.com

For trade enquiries, call us at: +91 11 46206000 (Timing: 10am-6pm) Mon to Fri

Send WhatsApp message "Hello" at +91 93117 14591 **For franchise:** retailhead@bodycareapparels.com









EXCLUSIVE STORES: NEW DELHI - SOUTH EX.1 • KAROL BAGH | GURUGRAM - M3M URBANA

— IEGACY OF EXCELENCE

JALANDHAR - MODEL TOWN • HOSHIARPUR - PHAGWARA ROAD | Customer Care No:-+91 0120-4854855









Available at all leading stores & also shop online @

flipkart

amazon





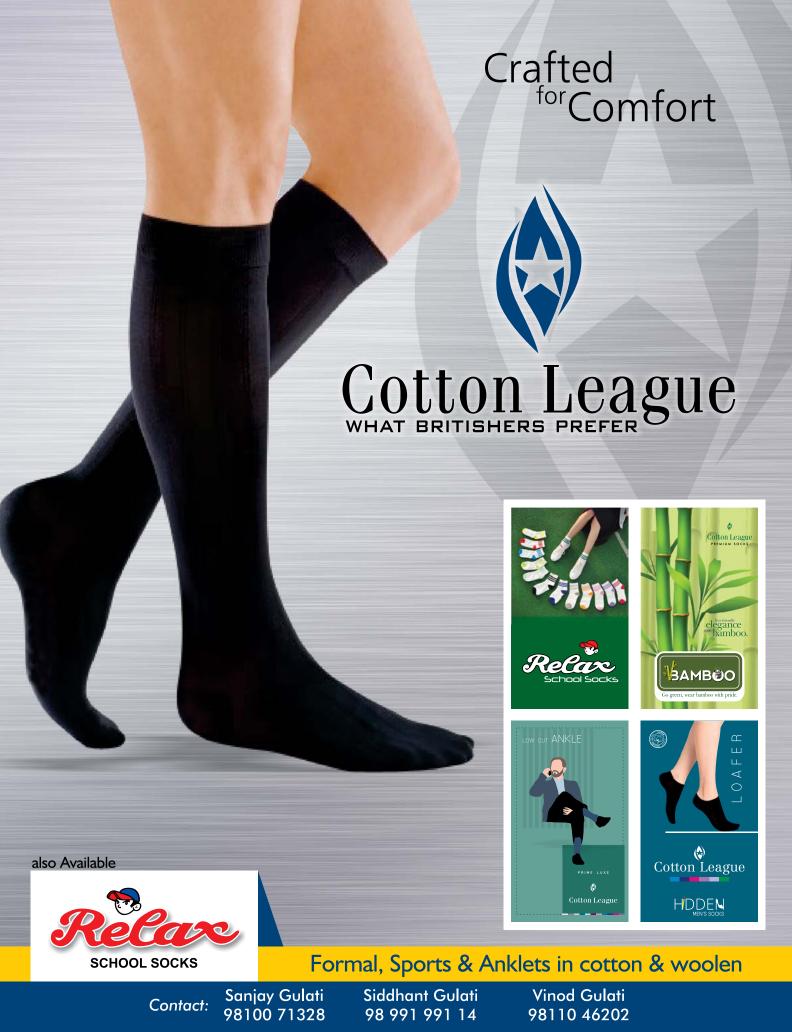


LIMEROAD§





Manufactured & Marketed by: **BODYCARE CREATIONS LTD.** :- D-30, Sector - 63, Noida - 201301, India **Tel:** +91 120 4686400 | **Fax:** +91 120 4686401 | **CUSTOMER CARE:** +91 120 4278669 | customercare@bodycarecreations.com **SHOP ONLINE:** www.ebodycare.in | **For Trade Enquiries:** +91-9899241782 | **hkjaiswal@bodycarecreations.com**



Mktd. by: WELL ENTERPRISES

ADD.: KAROL BAGH, NEW DELHI-I 10005 EMAIL: relaxsocks@yahoo.co.in



Manufactured & Marketed by: **BODYCARE CREATIONS LTD.** :- D-30, Sector-63, Noida, UP - 201301, India **Tel:** +91 120 4686400 | **Fax:** +91 120 4686401 | **CUSTOMER CARE:** +91 120 4278669 | customercare@bodycarecreations.com **SHOP ONLINE:** www.ebodycare.in | **For Trade Enquiries:** +91-9899241782 | **sandeep.sehdev@bodycarecreations.com**



Commander

PLAIN LONG TRUNK



Manufactured & Marketed By : Central TEXTILE MILLS

149, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007 (India) Additional Place of Business: 5B/8, Seals Garden Lane, Kolkata - 700 002 Consumer Helpline No.: 033 - 25281002 Email: youngindiactm@gmail.com

BONJOUR®



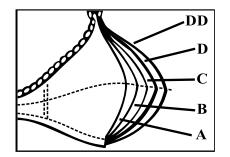
क्या अब यही आपकी लाडली का शौक बन गया है



शीशा... नवयौवन का पहला प्यार, घंटों बीत जाते हैं नई पोशाकें, बालों के नए—नए डिज़ाइन और अपनी सार—सम्भाल को निहारते हुए, लेकिन इस उम्र में उसे इन सबसे बढ़कर आत्मविश्वास की जरूरत होती है, युवावस्था के अन्य परिवर्तनों के साथ—साथ शारीरिक बदलाव में ढल पाना आसान नहीं है, माताएं पहली बार अपनी बेटी को 'ब्रा' के बारे में बताते समय इन बातों को समझती हैं, पर सवाल यह है कि क्या बेटी को कोई सी भी 'ब्रा' दी जा सकती है?

टीन-एजर को सहज विकास के लिए चाहिए स्वास ब्रा

आपने महसूस किया होगा कि कई नवयुवितयाँ ब्रा पहनना शुरू करने के बावजूद शर्माती संकुचाती रहती है। इसका कारण है गलत ब्रा का इस्तेमाल, जिससे उनमें पूरा आत्मविश्वास नहीं आ पाता और वे निश्चिंत नहीं रहती। इस उम्र में शारीरिक विकास के आकार में थोड़ी सी लापरवाही और ना समझी से बिटिया की फिगर, खूबसूरती और व्यक्तित्व पर असर पड़ सकता है।



टीन-एजर के लिए सही 'कप साइज' क्यों बहुत जरूरी हैं?

तन के सुडौल विकास और आराम के लिए यह जरूरी है कि आपकी बेटी सही कप साईज वाली ब्रा पहने। एक ही साइज के ब्रा में पाँच कप साइज़ होते है; ए—छोटा, बी—मध्यम, सी—बड़ा, डी—अधिक बड़ा, डीडी—डबल XL. टीन—एजर, पाँचों कप साइजों में मिलते है ताकि ब्रा आपकी लाडली को बिल्कुल सही फिट आये।

टीन-एजर विशेष रूप से नवयुवतियों के लिए

मेडिकल विशेषज्ञों की सिफारिशों और सुझावों के अनुसार तैयार किया गया 'टीन-एजर' नवयुवतियों को भरपूर आधार और आराम दिलाती है और उनका फिगर भी ठीक रखती है। इसकी सभी खूबियां सावधानीपूर्वक अनुसंधान और विशलेषण के बाद सोच-समझ कर रखी गई है।

100: सूती, लाइक्रा पट्टे के साथ सफेद एवं 5 और रंगो में उपलब्ध



Trade enquiry solicited from unrepresented areas

Belle Wears Pvt. Ltd. Delhi-95

Mobile No.: 09313326792

E-mail: customercare@bellewears.in

Web: www.teenagerbra.co.in



Perfect bra for growing girl.



Manufactured & Marketed by: **BODYCARE CREATIONS LTD.** :- D-30, Sector-63, Noida, UP - 201301, India **Tel:** +91 120 4686400 | **Fax:** +91 120 4686401 | **CUSTOMER CARE:** +91 120 4278669 | customercare@bodycarecreations.com **SHOP ONLINE:** www.ebodycare.in | **For Trade Enquiries:** +91-9899241782 | **sandeep.sehdev@bodycarecreations.com**





आयकर अधिनियम के अनुसार, बुनियादी छूट सीमा से कम आय वाले लोगों के लिए रिटर्न दाखिल करना अनिवार्य नहीं है। फिर भी करदाता को अनुपालन एवं वित्तीय रिकॉर्ड बनाए रखने के लिए निल रिटर्न दाखिल करना चाहिए। अगर आपको पासपोर्ट के लिए आवेदन करना है या वीज़ा हासिल करना है तो निल रिटर्न आपके पते का सबूत बन जाता है। इसके अलावा अगर आप बैंक से ऋण लेना चाहते हैं तो उसे मंजूर कराने के लिए आपके आयकर रिटर्न की जरूरत पडती है।

बैंक आपके जमा पर ब्याज से टीडीएस काट सकते हैं। ऐसे में रिफंड हासिल करने के लिए निल आईटीआर दाखिल करना आवश्यक है। उसी प्रकार कंसल्टेंट या फ्रीलांसरों को किए जाने वाले भुगतान पर सम्बंधित संस्थान भी टीडीएस काट सकते हैं। अगर आप ऐसे लोगों की आयकर के दायरे में नहीं आते हैं तो टीडीएस रिफंड का दावा करने के लिए निल आईटीआर दाखिल करना आवश्यक होता है।

अगर आप पिछले वित्त वर्ष में हुए घाटे को आगे किसी आय के बदले घटवाना चाहते हैं तो उसे बढ़ाने के लिए भी आपको निल रिटर्न दाखिल करना चाहिए। इस रिटर्न के ज़िरये आपका घाटा या नुकसान रिकॉर्ड में आ जाता है और आगे कभी आय या फायदे के बदले में यह घाटा दिखाकर कर में कटौती कराई जा सकती है। निल रिटर्न आपकी आय के प्रमाण के रूप में भी कार्य करता है। जिनका अपना रोजगार है या जिनकी आय नियमित नहीं है, उनके लिए यह बहुत महत्वपूर्ण दस्तावेज है क्योंकि इससे वित्तीय मामलों में उनकी विश्वसनीयता बढ़ जाती है।

इसलिए आयकर रिटर्न के विषय में यह भली-भांति समझ लें कि अगर आपकी आय कर-योग्य सीमा से कम है तो भी आपको अपना रिटर्न दाखिल करना चाहिए। इस प्रकार के रिटर्न को निल आयकर रिटर्न कहा जाता है।

विनोद कुमार



LUXURY

HOSIERY TIMES

Vol. 51 | Issue 10 | October 2024 | Pages 68

SWEET COLLECTION

Chief Patron - Mr. R.C. Jain, CMD (T.T. Ltd.) Mentor - Mr. V.K. Bajaj, CMD (Romance Creations)

Board of Advisors

Mr. Satish Gupta,

(Body Care International Ltd.)

CMD

Mr. Rakesh Grover,

(Groversons Apparels)

MD

Mr. Sanjay Dawar,

(Body Care Creations Ltd.)

Mr. Vijay Kumar Bajaj,

(D.S.H.M.A.)

Gen. Sect. Mr. Rajkumar Jain,

(Zonac Knitting Machines. Pvt Ltd.)

Mr. Atul Jain.

(Jain Hosiery Industries)

MD

Mr. Puneet Mittal. (Fairdeal Creations Pvt. Ltd.)

Mr. Amit Singh Kathuria,

(Tipsy Fashion Pvt. Ltd.)

Mr. K.B. Aggarwala,

(Rupa & Co., Ltd., Kolkata)

Mr. Shyam Sunder Sakseria,

(LTK Industries Pvt. Ltd. Kolkata)

Chairman

Editor-in-Chief Vinod Kumar

9810631982

Sub Editor Rohit Kumar

9818807384

Media & Design Head Satish Kumar

Sr. Manager (Production)

Sameer Julka

Editorial Advisor

Shamshad Ekram

Marketing Executive - Delhi

Mukesh Chauhan

(Advertising)

9810723473

Business Head - Mumbai

Rajesh Sinha

(Advertising)

9324077881

Sr. Correspondent - Delhi Umesh Kumar Dua

9999651798

Digital Marketing

Subhabrata Pal

8584886885

Legal Advisor J.S. Rawat, Advocate

Office Incharge Amrender Jha

Editorial Office

M-185, Gali No.12, Shastri Nagar, Delhi-110052 Ph. 011-23653834, Mob.: 9810631982 E-mail: hosierytimes@gmail.com

Printed and publish by Vinod Kumar on behalf of the owner Smt. Kamlesh Rani; printed at Laxmi Print India, 556, G.T. Road, Shahadra, Delhi-110032 and published from E-15/87, Sector-8, Rohini, Delhi-110085

All material printed in this publication is the sole property of Hosiery Times. All printed matter contained in the magazine is based on information from those featured in it. The views, ideas, comments and opinions expressed are solely of those featured and the Editor and Publisher do not necessarily subscribe to the same.

Cover Page: BODYCARE CREATIONS LTD.





CONTENTS

सोभासरिया ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस, सीकर में शामिल हुए...



7 अक्टूबर: विश्व कपास दिवस





भारत ने दुनिया को दिया कपड़ा...



READYMADE
GARMENT
EXPORTS TO
DRIVE INDIA'S
TEXTILE SECTOR
EXPANSION

WEST BENGAL HOSIERY INDUSTRY SEES GROWTH AMID GLOBAL SUPPLY...



THE POWER
OF HOSIERY
MAGAZINES:
WHY THE
HOSIERY TIMES
SHOULD...



ADVERTISERS INDEX

FRONT GATE FOLD

BODYCARE CREATIONS LTD.

INSIDE FRONT COVER:

BODYCARE INTERNATIONAL LTD.

BACK COVER

BODYCARE INTERNATIONAL LTD.

BACK INSIDE

AMUL MACHO HINT

OPENING GATE FOLD

GROVERSONS GROUP

OPENING GATE FOLD BACK INSIDE

FAIR DEAL BRASSIERES CO.

SPL. PAGE: LUX - (ONN & Cotts Wool)

SPL. PAGE: LUX - (Venus & Lyra)

SPL. PAGE: LUX - (Genxx Urban)

Bodycare Creations (Loungewear)	3
Well Enterprises (Relax Socks)	4
Bodycare Creations (Sportswear)	5
Young India	6
Bonjour Socks	7
Teenager Bra	8
Bodycare Creations (Body - X - M)	9
Bodycare Creations (Body - X - W)	11
Rupa & Co Torrido Thermals	13
T.T. Ltd.	15
Maya Hosiery	16
Saloni Bra	17
Ingrid Bra	19
Radhika Enterprises (EDA)	21
Aggarwal Industries (Lovino)	23
Candy Touch Intl.	25
Swagat Baniyan	27
Shri Balaji Hosiery Mills	29
Kansal Hosiery Industries	31
Goyal Trading Company	33
Arun Trading Company	34
Romance Creations	35
Ritex Overseas	37
Hosiery Times Modelling Agency	38

Intimasia Expo, Delhi - 2025	39
SBC Exports Ltd.	41
MPR Wools Pvt. Ltd.	42
Munim Jee	43
Magpie Impex	45-55
Essar Industries + Membership Form	57
Shri Balaji Enterprises	58



होजरी टाइम्स का नवम्बर 2024 अंक वार्षिक विशेषांक SUPER SOFT THERMAL WEAR ELASTOMETRIC FINISH



WINTER WEAR | SWEAT SHIRTS | TRACK SUITS | JECKETS - MEN, WOMEN & KIDS

For Inquiries T.T. Brands Ltd.: 878A, Master Prithvi Nath Marg, Karol Bagh, New Delhi - 110005 (INDIA)

Tel.: +91 11 45060708 | E-mail: shankar@ttlimited.co.in | Web.: www.ttlimited.co.in

Indian Brand 650 new styles for Selling in 65+ Countries Since 1964 & Registered Trade Mark owned by T.T. Industries, New Delhi-110005

होनरी टाइम्स का नवम्बर २०२४ अंक वार्षिक विशेषांक

र वर्ष की भांति इस वर्ष भी, होजरी टाइम्स पित्रका अपने पाठकों, विज्ञापनदाताओं, होजरी व्यापार से जुड़े व्यापारियों तथा होजरी निर्माताओं को विशेष अवसर प्रदान करने के लिए नवम्बर में वार्षिक विशेषांक प्रकाशित करने जा रही है। होजरी टाइम्स का विशेषांक एक ऐसा प्लेटफार्म है जिससे जुड़कर विज्ञापनदाता अपने उत्पादों को अधिक से अधिक पाठकों तक पहुंचा सकते हैं। इस अंक में होजरी टाइम्स पत्रिका अपने पाठकों को अवसर देता है कि यदि

उनके पास होजरी व्यापार से जुड़ी कोई जानकारी, लेख, आलेख, विचार और सुझाव है तो हमें भेजें अथवा पित्रका कार्यालय से सम्पर्क करें। होजरी टाइम्स पित्रका अपने पाठकों के लेख, विचार, जानकारी और सुझावों को पित्रका के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास करेंगी।

पाठकों, विज्ञापनदाताओं तथा होजरी व्यवसाय से जुड़े व्यापारियों से अनुरोध है कि आप होजरी उत्पादन, व्यापार, उद्योग, मशीनरी, तकनीक जिस किसी भी विषय पर अपनी बात रखना चाहते हैं, आपका स्वागत है। आपके लिए मौका है, आप अपने व्यापार को बढ़ा सकते हैं। आप होजरी टाइम्स पत्रिका के माध्यम से इस उद्योग के महत्वपूर्ण व्यक्तियों तथा भारतवर्ष में दूर-दूर तक फैले व्यापारियों से जुड़ सकते हैं।

अत: सभी विज्ञापनदाताओं से पुन: आग्रह है कि वे "पहले आओ, पहले पाओ" 20 नवम्बर, 2024 तक विशेषांक में अपना विज्ञापन बुक कराएं। यदि कोई पाठक या होजरी व्यापारी अपने सुझाव, विचार और लेख देना चाहे उनसे भी निवेदन है कि 16 नवम्बर, 2024 से पूर्व भेज दें। यदि लेख, सुझाव और विचार प्रकाशन योग्य होगा तो अवश्य प्रकाशित किया जाएगा। अन्तिम तिथि का इन्तजार न करें और यथाशीघ्र इस अवसर का लाभ उठाए। यह विशेषांक विशेष प्रस्तुति है और इसे अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाया जाता है। इसमें विज्ञापन देने से व्यापार के विस्तार में सहयोग मिलेगा। ■











Sardi mein bhi Garmi ka ehsaas...























CONNECT WITH US @ Ø

Manufactured and marketed by:

CHAWLA ENTERPRIESES

G-159, Sector D1 (P3) TDS City Ghaziabad U.P.-201102





सोभासरिया ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस, सीकर के सिल्बर जुबली समारोह में शामिल हुए उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़

🛨 मौके पर ग्रुप चेयरमैन पद्मश्री 🔁 प्रहलाद राय अग्रवाल, शांति देवी अग्रवाल, वाइस चेयरमैन घनश्याम प्रसाद अग्रवाल, एम.डी. कुँज बिहारी अग्रवाल, लिलता देवी अग्रवाल, रमेश अग्रवाल व मनीष अग्रवाल ने सभी आगंतुक अतिथियों का धन्यवाद करते हुए विद्यार्थियों और स्टाफ सदस्यों की 25 वर्ष की यात्रा में उनके सहयोग के लिए प्रशंसा की और आशा व्यक्त की कि वे इसी प्रकार संस्था को आगे बढ़ाने में योगदान देते रहेंगे, जिससे विद्यार्थियों को जीवन के नए लक्ष्य प्राप्त करने में मदद मिल सकें। इस अवसर पर विश्वविद्यालय मेरिट में स्थान प्राप्त करने वाले विद्याथियों को सम्मानित भी किया गया।

रजत जयंती समारोह के मुख्य अतिथि उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ ने कहा कि भारत का वैश्विक महत्व बढ़ रहा है, जिससे देश की आवाज पूरी दुनिया में सुनी जा रही है। इस अवसर पर राज्य के उपमुख्यमंत्री तथा तकनीकी एवं उच्च शिक्षा मंत्री प्रेमचंद बैरवा ने आशीर्वाद व सहयोग का आश्वासन दिया। इसके अलावा राजस्थान साकार के शहरी विकास मंत्री झाबर सिंह खर्रा और राज्यसभा सांसद घनश्याम तिवारी भी उपस्थित थे।

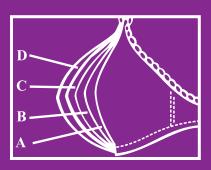
उपराष्ट्रपति और उनकी पत्नी सुदेश धनखड़ ने "एक पेड़ माँ के नाम" अभियान के तहत ग्रुप अध्यक्ष पद्मश्री पी.आर. अग्रवाल, शांति देवी अग्रवाल, घनश्याम प्रसाद अग्रवाल, कुँज बिहारी अग्रवाल, लिलता देवी अग्रवाल एवं हेरिटेज ग्रुप ऑफ कॉलेज कोलकाता के प्रदीप अग्रवाल, उनकी पत्नी सीमा अग्रवाल, अशोक अग्रवाल, के.सी. लुनावत, ट्रस्ट प्रतिनिधि मनोज जोशी, ग्रुप प्राचार्य डॉ. एल. सोलंकी की उपस्थिति में पौधारोपण कर पर्यावरण सरंक्षण का संदेश दिया।

उपराष्ट्रपति धनखड़ ने पद्मश्री प्रहलाद राय अग्रवाल, घनश्याम प्रसाद अग्रवाल और कुँज बिहारी अग्रवाल के भ्रातृ प्रेम एवं पारिवारिक मृल्यों को अनुकरणीय उदारहण मानते हुए देश की प्रगित को रेखांकित किया और कहा कि उद्योगों को शैक्षिणिक संस्थानों का सहयोग करना चाहिए। उन्होंने शोध और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए इस सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया तथा उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा को देश के ब्रेन ड्रेन और फोरेक्स ड्रेन जैसी आर्थिक चुनौतियों से निपटने का एक उपाय बताया। साथ ही आशा व्यक्त की कि सोभासिरया ग्रुप जल्द ही विश्वविद्यालय बनेगा और उत्कृष्ट शिक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। उन्होंने इंस्टिट्यूट को 25 वर्ष पूरा करने पर बधाई दी तथा ग्रुप अध्यक्ष पद्मश्री अग्रवाल की जीवनी का विमोचन किया।

तत्पश्चात्, छात्र-छात्राओं ने एक शानदार सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया, जिसने उपस्थित दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम में विविधता और रचनात्मकता की झलक दिखाई दी, जिसमें नृत्य, संगीत और नाटक के विभिन्न रंग शामिल थे। ■



INGRID Padded Bra provides you



- Material: 42% Cotton 38% Micro 20% Spandex
- Flexible cotton based Padded seamless cups
- Medium coverage bra
- Multiway styling with back closure
- Ultra soft and smooth detachable lycra straps

EST 1985 QUALITY PRODUCT BY

Come with addition transparent straps

Order online from our website: www.ingridbra.in

Also available on: a







BUSINESS ENQUIRY: +91 88822 71725



गारमेंट मार्केट में धूम मचाने की तैयारी में रिलायंस रिटेल, इनरवियर कंपनी से की साझेदारी

केश अंबानी कंपनी रिलायंस रिटेल ने इसराइल स्थित ब्रांडेड और प्रावेट लंबल के 'इनरवियर' बनाने वाली कंपनी डेल्टा गैलिल इंडस्ट्रीज के साथ ज्वाइंट वेंचर बनाने की घोषणा की है। रिलायंस रिटेल को उम्मीद है कि इस साझेदारी से गारमेंट मार्केट में उसकी स्थित मजबूत होगी। महिलाओं, पुरुषों और बच्चों के लिए गारमेंट्स बनाने वाली डेल्टा गैलिल के साथ इस साझोदारी में दोनों की 50:50% हिस्सेदारी होगी। इस साझेदारी के तहत डेल्टा गैलिल, रिलायंस के ब्रांड के लिए उत्पादों को डिजाइन करेगी और उन्हें तैयार करेगी।

18 महीनों में नया ब्रांड

ज्वाइंट वेंचर अगले 18 महीनों में डेल्टा फैमिली लाइफस्टाइल स्टोर और पुरुषों तथा महिलाओं के 'इनरवियर' के लिए एथेना ब्रांड भी पेश करेगा। कंपनी ने कहा कि अपने इनोवेशन और उत्पाद उत्कृष्टता के लिए प्रसिद्ध डेल्टा गैलिल इस उद्यम का लाभ उठाकर तेजी से बढ़ते भारतीय बाजार में अपनी उपस्थित का विस्तार करेगी।

रिलायंस रिटेल के प्रबंध निदेशक वी सुब्रमण्यम ने कहा कि हम साथ मिलकर अपने रिटेल प्लेटफॉर्म पर उपभोक्ताओं के लिए पेशकश को बढ़ाने के लिए तैयार हैं। डेल्टा गैलिल के मुख्य कार्यपालन अधिकारी (सीइओ) इसहाक दबाह ने कहा कि ज्वाइंट वेंचर से रिलायंस रिटेल को डेल्टा गैलिल की गहन उद्योग विशेषज्ञता और इनरवियर, एक्टिवयर में इनोवेशन कैपिसिटी का लाभ उठाने में मदद मिलेगी। बता दें कि अरबपित मुकेश अंबानी की अगुवाई वाली रिलायंस इंडस्ट्रीज की खुदरा इकाई रिलायंस रिटेल वेंचर्स लिमिटेड ने वित्त वर्ष 2023-24 में तीन लाख करोड़ रुपये का राजस्व अर्जित किया था। ■

श्रद्धांजलि



स्व. श्रीमती शांति देवी जी

हम बड़े दु:स्न के साथ सूचित कर रहे हैं कि (दिल्ली स्टेट होजरी मैन्युफैक्वंस एसोसिएशन) दिल्ली के जनरल सेक्रेट्री श्री विजय बजाज जी की माताजी

श्रीमती शांति देवी जी

(धर्मपत्नी स्व. श्री महावीन प्रसाद बजाज (हरसोरा वाले) का स्वर्गवास

दिनांक 12-10-2024

को हो गया है, हम उनको होजरी टाइम्स की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। एवम्

डपण् यदाञ्च यठित

होजरी टाइम्स परिवार की ओर से ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वे अपने श्री चरणों में दिवंगत आत्मा को स्थान प्रदान करें और मैसर्स के.के. **बादर्स** व समस्त बजाज परिवार को इस दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।





CAPRI LEGGINGS BLOOMERS BRA SLIPS PANTIES



Luxury Innerwear and comfort wear for Women, made with the finest Cotton to ensure a soft, supple finish that enables breathability and accentuates your body.



RADHIKA ENTERPRISE

टेक्सटाइल सेक्टर की दशा सुधारेगा इंसेंटिव और सस्ता कच्चा माल, 45 दिनों के भुगतान नियम में बदलाव की मांग

भि के बाद देश में सबसे अधिक 4.5 करोड़ लोगों को प्रत्यक्ष तौर पर रोजगार देने वाले टेक्सटाइल सेक्टर में पिछले साल कुछ सालों से घरेलू और निर्यात, दोनों ही स्तर पर कई चुनौतियां बनी हुई हैं। सरकार वर्ष 2030 तक घरेलू व निर्यात मिलाकर टेक्सटाइल उद्योग के कारोबार को 350 अरब डॉलर तक ले जाना चाहती है और इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए टेक्सटाइल उद्यमी कच्चे माल की सस्ती उपलब्धता, उत्पादन बढ़ाने के लिए इंसेटिव, भुगतान के नियम में बदलाव, फ्रेट दरों में सब्सिडी, बांग्लादेश से होने वाले आयात पर नियंत्रण, ग्रीन एनर्जी फंड और सस्ती दरों पर कर्ज चाहते हैं।

तभी बढ़ेगा जीडीपी में टेक्सटाइल सेक्टर का योगदान वर्तमान में 170 अरब डॉलर के कारोबार वाले टेक्सटाइल सेक्टर के उद्यमियों का कहना है कि इन मांगों को पुरा करने पर ही जीडीपी में टेक्सटाइल सेक्टर के 2% के योगदान को वर्ष 2030 तक दोगुना किया जा सकता है। वर्ष 2018-22 के बीच वैश्विक टेक्सटाइल निर्यात में जहां 3.4% की बढ़ोतरी हुई वहीं कोरोना महामारी व भ-राजनीतिक कारणों से भारत के टेक्सटाइल निर्यात में सिर्फ 1% का इजाफा रहा। पिछले वित्त वर्ष 2023-24 में सभी प्रकार के गारमेंट के निर्यात में पूर्व के वित्त वर्ष के मुकाबले 10.25 तो मैनमेड यार्न और फैब्रिक में 5.46% की गिरावट रही। सिर्फ कॉटन यार्न और फैब्रिक के निर्यात में 6.71% की बढोतरी रही। ■

श्रद्धांजलि

स्व. श्रीमती आशा मित्तल

बड़े दु:ख्न के साथ सूचित कर रहे हैं कि

मैसर्स - जे.बी. टेक्सटाइल (रुविका)

व फैब्रिक इंग्डिया

प्रो. श्री अनमोल मित्तल की माताजी
श्रीमती आशा मित्तल

(धर्मपत्नी स्व. श्री हरि किशन मित्तल)

(धर्मपत्नी स्व. श्री होरे किशन मित्तन) का स्वर्गवास

दिनांक 08-10-2024

को हो गया है, हम उनको होजरी टाइम्स की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

एवम्

होजरी टाइम्स परिवार की ओर से ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वे अपने श्री चरणों में दिवंगत आत्मा को स्थान प्रदान करें और समस्त मित्तल परिवार को इस दख्न को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।





पास यानी कॉटन का नाम जहां पर सुनने के लिए आता है तो, हर कोई मुलायम और आरामदायक कपड़ों की श्रेणी में इसे रख देते हैं। फैशन के दौर में आज भी कॉटन के कपड़े सबकी पसंद बने हुए हैं जो सुकूनता का अनुभव कराता है। कॉटन के प्रति बढ़ावा देने के लिए विश्व कपास दिवस 7 अक्टूबर को मनाया जाता है। कॉटन के कपड़े से ठंडक और आरामदायक सुकून मिलता है। पर्यावरण की सुरक्षा के लिए कॉटन का कपड़ा सबसे अच्छा माना जाता है। चलिए जानते हैं विश्व कपास दिवस और कॉटन के कपड़े के फायदे के बारे में।

जानिए कब से हुई कपास दिवस की शुरूआत

यहां पर बात करें तो, दुनियाभर के कपस की उपयोगिता बताने के लिए विश्व कपास दिवस दुनियाभर में 7 अक्टूबर को मनाया जाता है। इसकी शुरुआत 2019 में चांड, बेनिनि, बुर्किना फोसा और माली द्वारा मिलकर की गई थी। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य कपास से जुड़ी जानकारी लोगों तक पहुंचाने के लिए विशेष कार्यक्रमों का आयोजन करने से है। कपास की जरूरत हमारे जीवन में किस तरह से है, इसे बताने के लिए यह दिवस मनाया जाता है। इसे लेकर जर्नल ऑफ एडवांसिस इन कॉटन रिसर्च के अनुसार कहा गया है कि कपास की गिनती दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण फाइबर क्रॉप्स में की जाती है। 100 से अधिक देशों में इसकी खेती होती है।

कपास को कृषि क्षेत्र के जरिए सबसे बड़ी इकोनॉमी का हिस्सा माना जाता है।

जानिए कॉटन के कपड़ों के फायदे कपास यानी कॉटन जिसे सूती भी कहते है इसके कपड़े गर्मी के मौसम में हर कोई पहनना पसंद करता है। इन कपड़ों से कंफर्ट तो मिलता ही है, शरीर को किसी प्रकार की परेशानी नहीं आती है।

1. काफी होता है आरामदायक

अगर आप कॉटन के कपड़े पहनना पसंद करते हैं तो, इसमें आपको सबसे ज्यादा आराम मिलता है। यहां पर सादे और मुलायम सूती कपड़े को पहनने से पसीने की समस्या ये निजात मिलती है क्योंकि यह कपड़े पसीने को सोखने का काम करते हैं। कपड़ों के अलावा बेडशीट्स, परदों और मैट्स के लिए भी सूती और जूट का इस्तेमाल करते हैं।

2. आसानी से खरीद सकते हैं

अगर आप कॉटन के कपड़े पहनना पसंद करते हैं तो यह आराम से मिलता ही है, साथ ही इन्हें खरीदने में ज्यादा पैसा नहीं चुकाना पड़ता है। कॉटन के कपड़े लंबे वक्त तक आपके साथ बने रहते हैं। ऐसे में सूती कपड़ों को खरीदना फायदे का सौदा साबित होता है।

3. एन्वायरमेंट फ्रेंडली

अगर आप कॉटन के कपड़े पहनना पसंद करते हैं तो, यह पर्यावरण के नजिरए से बेहतर होते हैं। ये पूरी तरह से बायोडीग्रेडेबल है। ससटेनेबल फैशन को अपनाने से आप एनर्जी, जल और अन्य रिसोर्सिज़ को सेव कर पाते हैं। कॉटन को परमाकल्चर फार्मिंग से उगाया जाता है, जिसे काफी फायदेमंद माना जाता है।

त्वचा के लिए सही

सूती या कॉटन के कपड़े पहनने से त्वचा को किसी प्रकार की समस्या नहीं आती है। ऑर्गेनिक कॉटन में इस्तेमाल किए जाने वाले प्राकृतिक रंग स्किन का ख्याल रखते हैं। इन्हें आप दिन में किसी भी वक्त पहन सकते हैं। इसलिए कॉटन का इस्तेमाल हर तरह के कपडों में होता है। ■



Marketing & Manufactured by:



Head Office: 3703 1st & IInd Floor, Maiman Street, Gali Jamidar, Pahari Dheeraj, Delhi - 110 006 Branch Office: 127, Third Floor, Old Gupta Colony, Kalyan Vihar, New Delhi - 110 009

Mobile: 8810447373, 9868348433 • Email: candytouchlingerie@gmail.com



रत दुनिया के सबसे बड़े टेक्सटाइल भारत दुनिया क राजा । इंडस्ट्रीज में से एक है। भारत दुनिया के कपड़ा और ड्रेस बाजार में 4% हिस्सेदारी रखता है। यह उद्योग देश के कुल जीडीपी में 2% का योगदान देता है और 45 मिलियन से ज्यादा लोगों को सीधे तौर पर रोजगार देता है। यह इंडस्ट्री देश में रोजगार देने वाली दूसरी सबसे बडी इंडस्ट्री है टेक्सटाइल उद्योग यानी कपड़ा उद्योग वर्ष 2030 तक कपड़ा उत्पादन में 250 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है। कपडा उद्योग को पिछले 5 सालों में पर्याप्त प्रोत्साहन मिला है। केंद्र सरकार की कई रणनीतियों ने दुनिया के कपडा उत्पादकों के बीच भारत की भूमिका को मजबूत करने पर जोर दिया है। ये रणनीति फार्म से फाइबर से फैक्ट्री से फॉरेन (विदेश) के 5एफ दुष्टिकोण पर आधारित है। कपडा उद्योग के लिए प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव (पीएलआई) स्कीम, कस्तूरी कॉटन भारत कार्यक्रम, राष्ट्रीय तकनीकी कपडा मिशन और पीएम मेगा इंटीग्रेटेड टेक्सटाइल रीजन एंड अपैरल पार्क योजना जैसी पहलों के जरिये कपडा उद्योग में काफी ज्यादा बदलाव आया है। 2030 तक निर्यात में 100 अरब अमेरिकी डॉलर हासिल करने के भारत के महत्वाकांक्षी प्रयासों से प्रेरित होकर महाराष्ट्र देश के कपडा उद्योग को आगे बढाने में एक प्रबल दावेदार के रूप में उभरा है।

देश की कपड़ा इंडस्ट्री में महाराष्ट्र का योगदान सबसे ज्यादा

महाराष्ट्र के टेक्सटाइल मंत्री चंद्रकांत पाटिल ने कहा कि राष्ट्रीय कपड़ा उद्योग में हमारा योगदान सबसे ज्यादा है। कुल कपड़ा और ड्रेस उत्पादन का 10.4% और भारत में कुल रोजगार का 10% से ज्यादा रोजगार महाराष्ट्र से आता है। इसके अलावा महाराष्ट्र औद्योगिक विकास निगम ने 11 एक्सक्लूसिव टेक्सटाइल पार्क स्थापित करके राज्य में कपड़ा उद्योग के विकास में तेजी ला दी है। ये पार्क रणनीतिक रूप से अमरावती, टाणे, सोलापुर, कोल्हापुर, नागपुर, नासिक, पुणे और नंदुरबार जैसे क्षेत्रों में स्थित हैं। यह आंकड़ा वर्ष 2020 तक का है।

महाराष्ट्र में देश का सबसे तेजी से बढ़ता हुआ कपड़ा उद्योग

1854 में बॉम्बे स्पिनिंग एंड विविंग की स्थापना के साथ आधुनिक कपास उद्योग के भारत में विस्तार की कवायद में महाराष्ट्र ने आने वाले दशकों के लिए देश के कपडा उद्योग में अपनी जगह बनाई। 1870 के दशक में 60% कपास मिलें महाराष्ट्र की हुआ करती थीं। महाराष्ट्र अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण इस उद्योग में रहा है। अग्रणी कपास के लिए विशाल उपजाऊ मिट्टी और व्यापक समुद्र तट तक पहुंच के साथ यह राज्य एक अग्रणी टेक्सटाइल सेंटर के रूप में अपनी हिस्सेदारी बढाने के अपने प्रयासों को आगे बढ़ा रहा हैं। यह मुंबई में एक टेक्सटाइल बिजनेस सेंटर स्थापित करने की तैयारी कर रहा है, जिससे इसे चीन के गुआंगझो और तुर्की के इस्तांबुल के साथ प्रतिस्पर्धा में बढ़त मिलेगी।

तीन लाख लोगों को मिलेगा रोजगार

यह राज्य कई मैटेरियल से संबंधित खुबियों को अपने कपडों में बनाए रखता है इसलिए टेक्सटाइल हब के रूप में इसकी स्थिति मजबूत बनी हुई है। ग्लोबल टेक्सटाइल हब के रूप में महाराष्ट्र की उन्नति को सुविधाजनक बनाने के लिए बुनियादी ढांचागत क्षमताओं को मजबूत करने में नीतियों और हस्तक्षेपों पर एक मजबूत फोकस भी रहा है। हाल के दिनों में कपडा उद्योग में क्रांति लाने में महाराष्ट्र राज्य के शानदार प्रयासों ने राष्ट्रीय मोर्चे पर पहचान दिलाने का काम किया है क्योंकि यह राज्य पीएम मित्रा पार्क योजना के 7 प्राप्तकर्ताओं में से एक बन गया है। पीएम मित्रा पार्क अमरावती में स्थापित किया जाएगा, जिसमें 10,000 करोड़ रुपये आने का अनुमान है। इसके अलावा इससे करीब 300,000 लोगों के लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से

महाराष्ट्र बनेगा ग्लोबल टेक्सटाइल हब, 3 लाख लोगों को मिलेगा रोजगार

रोजगार के अवसर भी पैदा होंगे।

कपड़ा उद्योग के विकास के लिए ये है

पीएम मित्रा पार्क को महाराष्ट्र उद्योग विकास निगम द्वारा विकसित किया जाएगा और केंद्र सरकार द्वारा आर्थिक सहायता प्रदान की जायेगी। पीएम मित्रा पार्क स्थापित करने का उद्देश्य राज्य सरकार के तहत संपूर्ण बुनियादी ढांचे की स्थापना करके निवेशकों के लिए व्यवसाय संचालन को आसान बनाना है, जिससे निवेशकों को अपने कामकाज को शुरू करने की सह्लियत मिल सके। खुद को टेक्सटाइल हब के रूप में स्थापित करने के अपने दृष्टिकोण को आगे बढाते हुए इस राज्य ने 18 मिनी टेक्सटाइल पार्क विकसित करने की प्रतिबद्धता जताई है। मिनी पार्क विकसित करने का लक्ष्य निवेश के रूप में 1,800 करोड़ रुपये इकठ्ठा करना और 36,000 व्यक्तियों को रोजगार के अवसर प्रदान करना है। इसके अलावा अगले 5 सालों में 6 टेक्निकल टेक्सटाइल पार्कों का निर्माण, टिकाऊ इनोवेशन को लागू करने के लिए रिसर्च और डेवलपमेंट को बढाना, व्यापार करने में आसानी को बढावा देने के लिए इन्फोर्मेशन टेक्नोलॉजी के उपयोग पर अतिरिक्त जोर देना और उद्योग में पर्याप्त स्किल्ड वर्कफोर्स के लिए स्किल डेवेलपमेंट को बढ़ाना है। ये उद्देश्य राज्य के कपडा क्षेत्र को पूरी तरह से बदलने की इसकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। महाराष्ट्र राज्य ग्लोबल टेक्सटाइल हब बनने के सफर में जैसे-जैसे आगे बढ़ रहा है वैसे-वैसे बदलाव लाने वाली और समावेशी एकीकृत और टिकाऊ टेक्सटाइल नीतियां राज्य की क्षमता को बढाने का काम करेंगी। 🗖





SWAGAT [®] is a registered trademark of **GOWRI HOSIERY MILLS, TIRUPUR**

MFRS: GOWRI HOSIERY MILLS

67, LAKSHMI NAGAR, 50 FEET ROAD, TIRUPUR - 641 602

PH: 0421-3203382, 8870003801 • email us : gowrihosiery_mills@yahoo.co.in





भारत टेक्स 2025 में लगेगा कपड़ीं का मेला, केंद्रीय मंत्री ने कहा -कपड़ा उद्योग से 3.5 करोड़ नोकरियां पैदा होने की उम्मीद

क्सटाइल यानि कपड़ा उद्योग प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से देश में रोजगार के साथ ही बाजार को भी बढ़ा रहा है। यही वजह है कि भारत में वस्त्र उद्योग से साल 2030 तक 35,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर तक बढ़ने और 3.5 करोड़ नौकरियां सुजित करने की आशा है।

भारतीय ब्रांड को मिलेगी पहचान

दरअसल, केंद्रीय कपड़ा मंत्री गिरिराज सिंह ने वाणिज्य भवन में आयोजित 'भारत टेक्स 2025' के कर्टेन रेजर कार्यक्रम के दौरान कहा कि विश्व मंच पर भारत को उसके 'भारत ब्रांड और हरित टिकाऊ कपड़ा उत्पादकों से पहचान मिलेगी। कपड़ा उद्योग के लिए केंद्र सरकार की पीएलआई योजना परिधाान उद्योग को उत्पादन बढ़ाने और अपनी ब्रांडिंग को बढ़ावा देने में सक्षम बनाएगी।

5एफ-फार्म से फाइबर से फैक्ट्री से फैशन से फॉरेन तक का प्रतीक

उन्होंनें कहा कि नवाचार, सहयोग और मेक इन इंडिया भावना के साथ यह कार्यक्रम प्रधानमंत्री के 5एफ दृष्टिकोण-फार्म से फाइबर से फैक्ट्री से फैशन से फारॅन तक का प्रतीक है। उन्होंनें सभी स्टेकहोल्डर और राज्य सरकारों से इस आयोजन में समान रूप से भाग लेने का आग्रह किया। इस मौके पर कपड़ा सचिव रचना शाह ने कहा कि पिछला भारत टेक्स 2024 एक सफल आयोजन रहा था। इस बार भी इस आयोजन को नई ऊंचाइयों पर ले जाया जाएगा। इसमें दुनिया भर के टेक्सटाइल क्षेत्र से जुड़े हुए लोग भाग लेंगे।

क्या है 'भारत टेक्स 2025'

भारत टेक्स 2025 एक वैश्विक कार्यक्रम है, जो कपड़ा निर्यात संवर्धन परिषदों के एक संघ द्वारा आयोजित किया जा रहा है और कपड़ा मंत्रालय द्वारा समर्थित है। 14-17 फरवरी, 2025 तक आयोजित होने वाला भारत टेक्स 2025 दो अत्याधुनिक स्थानों पर होगा। इस बार भारत मंडपम, नई दिल्ली और इंडिया एक्सपो सेंटर एंड मार्ट, ग्रेटर नोएडा में यह एक साथ

आयोजित किया जाएगा। मुख्य कार्यक्रम 14-17 फरवरी, 2025 तक भारत मंडपम में आयोजित किया जाएगा और 12-15 फरवरी, 2025 तक इंडिया एक्सपो सेंटर एंड मार्ट, ग्रेटर नोएडा में प्रदर्शित की जाएंगी। इसमें वस्त्रों की संपूर्ण मूल्य श्रृंखला को शामिल किया जाएगा। हस्तशिल्प, परिधान मशीनरी, जातीय परिधान से संबंधित प्रदर्शनियां आयोजित की जाएंगी। 200,000 वर्ग मीटर में फैले इस आयोजन में 5,000 से अधिक प्रदर्शकों, 100 से अधिक देशों के 6,000 अंतरराष्ट्रीय खरीदारों की मेजबानी की जाएगी और इस वर्ष के आयोजन में 1,20,000 से अधिक आगंतुकों के भाग लेने की उम्मीद है। इस कार्यक्रम में करीब 100 अंतरराष्ट्रीय वक्ता भी हिस्सा लेने वाले हैं।

भारत टेक्स प्रदर्शनी में देशभर के कपड़ों की मिलेगी वैरायटी

भारत टेक्स प्रदर्शनी में परिधान, घरेलू सामान, फर्श कवरिंग, फाइबर, सूत, धागें, कपड़े, कालीन, रेशम, कपड़ा आधारित हस्तशिल्प, तकनीकी कपड़ा और बहुत कुछ शामिल होगा। इसके अलावा, हस्तशिल्प और परिधान मशीनरी पर प्रदर्शनियां, जनजातीय परिधानों का प्रदर्शन इंडिया एक्सपो सेंटर मेंटर और मार्ट, ग्रेटर नोएडा के सहयोगी स्थल पर आयोजित किया जायेगा।

गोलमेज सम्मेलन और बीटूबी बैठकें भी होगी

कपड़ा महोत्सव कई प्रकार की गतिविधियों का पेशकश करेगा, एक वैश्विक आकार का व्यापार मेला और एक्सपो, एक वैश्विक स्तर का कपड़ा सम्मेलन, सेमिनार, सीईओ गोलमेज सम्मेलन और बी2बी और जी2जी बैठकें होंगी। इसमें रणनीतिक निवेश घोषााएं, उत्पाद लॉन्च ओर वैश्विक कपड़ा उद्योग को नया आकार देने के लिए तैयार सहयोग से शामिल होंगे। उपस्थित लोग लाइव प्रदर्शनों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और फैशन प्रस्तुतियों, डिजाइनर और ब्रांड प्रदर्शनियों और स्थिरता कार्यशालाओं और विशेषज्ञ वार्ता की प्रतीक्षा कर सकते हैं। ■





ON FIRST

REGISTRATION

Introducing

AUKAPE

Retailers' Scheme

Effective from 01.08.2024 onwards

SCAN EVERY BOX OF THE BELOW PRODUCTS AND COLLECT SUPER POINTS!







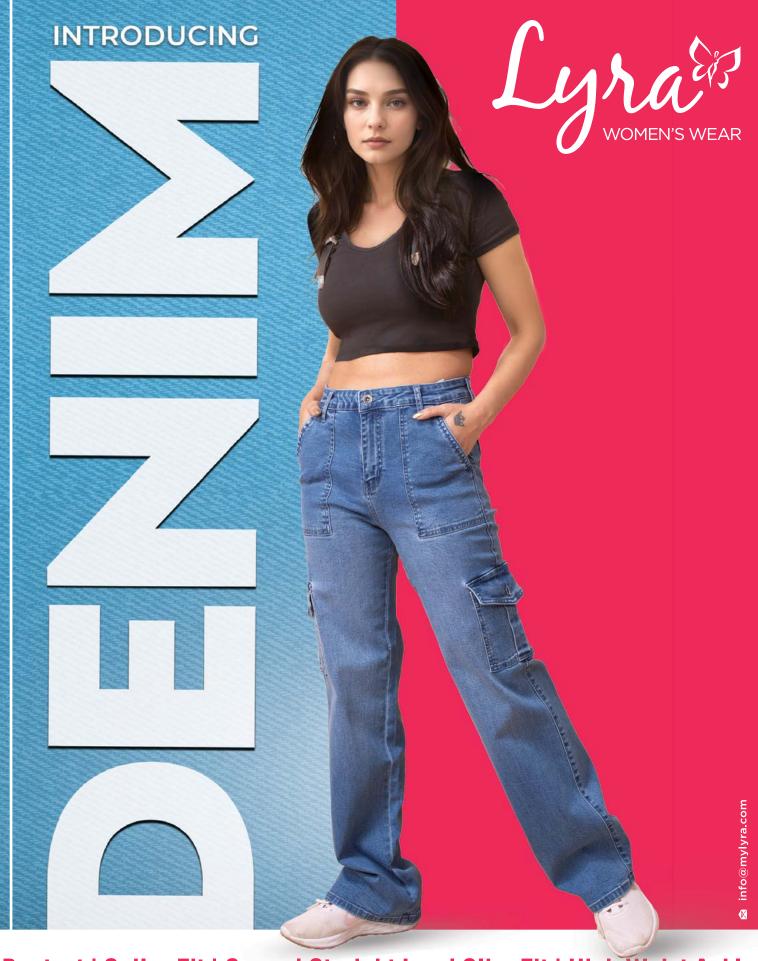






SUPER POINTS PER BOX*





Bootcut | Sailor Fit | Cargo | Straight Leg | Slim Fit | High Waist Ankle





HREE BALAJI HOSIERY MIL

G-152, Sector D-1 Apparel Park, Tronica City Industrial Area, Loni, Ghaziabad - 201102 (U.P.) Email: mayank@shreebalajihosierymills.com ● Mob.: 09210306255, 09560084563, 9312206255, 9899406647

BRANCH OFFICE:

18/34, Bridgeway Colony, Extension 4th Street, Tirupur - 641607. TAMILNADU • Mob.: 9999438921 • E-mail: shreebalajihosierymills@gmail.com • Website: www.shreebalajihosierymills.com



लुधियाना की होजरी इंडस्ट्री में चाइनीज़ कपड़े का

80% तक कब्जा



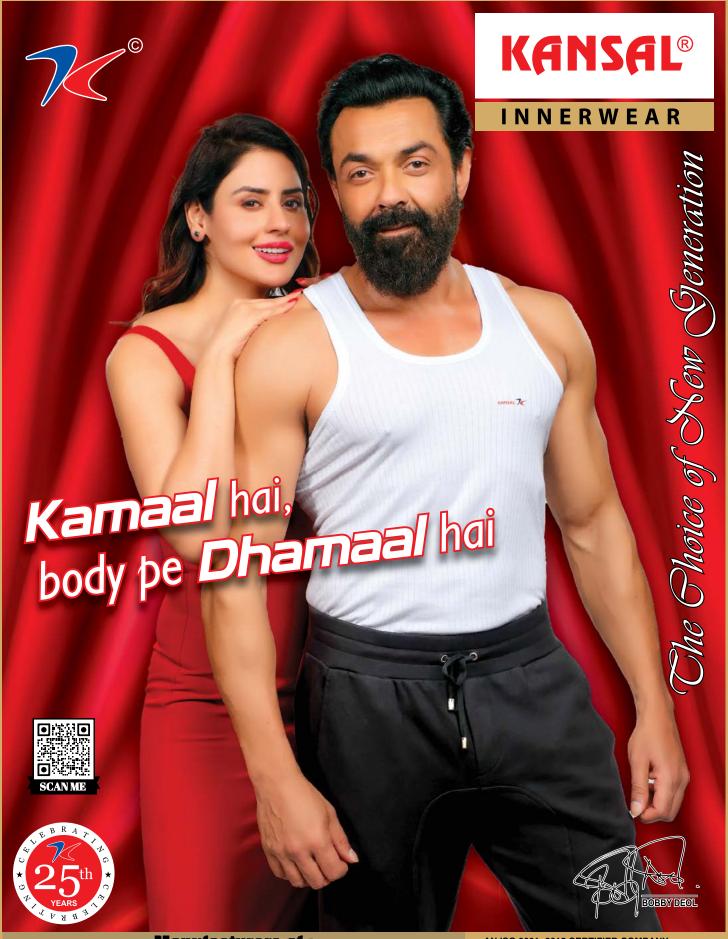
धियाना की होजरी इंडस्ट्री पर चाइनीज़ कपड़े का कब्जा हो गया है। होजरी ओर टेक्सटाइल मार्केट में पिछले साल की तुलना में चाइनीज कपड़े की मांग में जबरदस्त इजाफा हुआ है। कारोबारियों के अनुसार, जहां पिछले साल 50% चाइनीज कपड़ा बाजार में उतरा था, वहीं अब यह आंकड़ा बढ़कर 80% तक पहुंच गया।

बांग्लादेश में चल रहे विवाद के चलते भारतीय बाजार में चाइनीज कपड़ों की खपत तेजी से बढ़ी है। पिछले साल लगभग 40 करोड़ रुपए का चाइनीज कपड़ा बिका था, जबिक इस बार यह आंकडा 1500 करोड़ रुपए तक पहुंचने का अनुमान है। फैक्ट्रियों ने इस कपड़े का उपयोग कर शर्ट, जैकेट, ट्रैक सूट, पायजामा और कोट तैयार किए हैं और इन्हें विभिन्न राज्यों में भेजा जा रहा है।

वहीं, होजरी कारोबारी नवीन ढींगरा सोनू ने बताया कि चाइनीज इम्पोर्टेड कपड़ों में सफाई और डिजाइन की गुणवत्ता भारतीय कपड़ों से बेहतर है। पिछले साल से ही ग्राहकों ने मॉल के लिए चाइनीज कपड़ों की मांग बढ़ाई थी, और इस बार 80% इसी कपड़े के ऑर्डर आ चुके हैं। उधर, कारोबारी भूपिंदर सिंह ठुकराल ने कहा कि भारत में उस तकनीक की मशीने नहीं हैं जो इतनी सफाई से कपड़ा बना सकें। चाइनीज और भारतीय कपड़ों में 50% तक दाम का अंतर है।

भारतीय कपड़ा उद्योग के लिए मांग बढ़ना चुनौती

टेक्सटाइल कारोबारी विनय गुप्ता ने कहा कि चाइनीज कपड़े की फिनिशिंग उच्च गुणवत्ता की होती है, जिससे यह ग्राहकों की पसंद बन चुका है। चाइनीज कपड़ा 25 किलो का होता है, जबिक भारतीय कपड़ा 30 किलो का होता है और दोनों के दामों में 3000 रुपए का अंतर है। लुधियाना की होजरी और टेक्सटाइल इंडस्ट्री में चाइनीज कपड़े की बढ़ती मांग स्थानीय बाजार पर प्रभाव डाल रही है। ■



			_4 -
	ctur	ore	-

VESTS GYM VEST UNDERWEAR **GIRL SLIPS BLOOMER** READYMADE GARMENTS **PANTIES HANDKERCHIEFS KIDS SORTY & JUNIOR** & MANY MORE...

AN ISO 9001: 2015 CERTIFIED COMPANY Mfd. by.:

KANSAL HOSIERY INDUSTRIES LLP

68-71, Karuppanna Gounder layout, 1st street, Tirupur-641607 (T.N) INDIA Customer Care No.: 09344611112 Website: www.kansalinnerwear.com

Visit us at 👩 📋 🚮









पिछले ३०० साल से महिला अंडरगारमैंट्स

पन के विक्योरिया एंड अल्बर्ट म्यूज़ियम में इन दिनों एक खास नुमाइश लगी हुई है। इसमें पिछले तीन सौ सालों में महिलाओं के अंडरगारमेंट्स का इतिहास बताने की कोशिश की गई है।

इस नुमाइश में ब्रिटेन, फ्रांस, रूस और अमेरिका में अलग-अलग दौर के अंडरगारमेंट्स रखे गए हैं और अलग-अलग दौर के अंतर्वस्त्रों का इतिहास भी लोगों को बताने की कोशिश की जा रही है।

अंतर्वस्त्रों की इस प्रदर्शनी में उन्नीसवीं सदी में चलन में रहीं क्रिनोलाइन को भी रखा गया है। ये जालीदार कपड़ा देख अभी तो आपको समझ में ही नहीं आएगा कि भला इसका क्या इस्तेमाल था। असर में उस वक्त चौड़े घेरों वाली स्कर्ट का चलन था, इसके लिए महिलाएं ऐसे जालीदार पेटीकोट पहनती थीं जिससे स्कर्ट का घेरा खुलकर दिखे। साथ उनकी खुबस्रती भी।

इसलिए स्टील और लिनेन का मेल से बनाई जाती थी ये क्रिनोलाइन। इनका चलन ब्रिटेन से लेकर जापान तक में था। हालांकि औरतों की आजादी की तरफदारी करने वाली महिलाएं इसे एक बड़ी बंदिश मानती थीं। क्रिनोलाइन का पुरजोर विरोध किया गया। इसे फैशन को दुनिया का सबसे बड़ा हादसा माना जाता है।

पिछले 300 साल में महिला अंडरगारर्मेंटस

आज की महिलाओं की लांजरी एकदम बदल चुकी है। मगर, एक चीज जो तब भी हिट थी और आज भी है, वो है कॉर्सेट। फैशन के तमाम दौर पिछली तीन सदियों में आए और गए। मगर अठारहवीं सदी से इक्कीसवीं सदी तक आते-आते भी कॉर्सेट में लोगों की दिलचस्पी कभी कम नहीं हुई। विक्टोरिया एंड अलबर्ट म्यूजियम में 1980 में बनी एक कॉर्सेट को नुमाइश के लिए रखा गया है। सिल्क की बनी इस गुलाबी कॉर्सेट के बारे में कहा जाता है कि शायद ये ब्रिटेन में बनी थी। एडविना कहती हैं कि कॉर्सेट को इसलिए भी खूब पसंद किया गया क्योंकि ये कमर को पतली और हिप्स के उतार चढ़ाव को बेहतर तरीके से दिखाती थी।

प्रदर्शनी में साल 1900 में बने बेहद सेक्सी जुराबों को भी रखा गया है। कहा जाता है कि ये जुराबें राजकुमारी एलेक्जेंड्रिया ने पहनी थी। वो बाद में डेनमार्क की महारानी बनीं। उनके बारे में कहा जाता था कि उनके कपड़े नए फैशन को जन्म देते थे। वे बहुत फैशनेबल मानी जाती थीं।

पहले कपड़ों के भीतर से जुराबों का झांकना बुरा माना जाता था। मगर एडविना कहती हैं कि राजकुमारी एलेक्ज़ेंड्रिया ने ऐसी खूबसूरत जुराबें पहनकर इस पाबंदी को हमेशा के लिए खत्म कर दिया।

आज की ब्रा के चलन में आने से पहले इस तरह की चोली का चलन आया था, बीसवीं सदी की शुरुआत में। सिल्क और कॉटन से बनी ये चोलियों, ज्यादा आरामदेह और इस्मेमाल में आसान मानी गईं। यही आगे चलकर ब्रा के तौर पर दुनिया के सामने आईं।

नुमाइश में कुछ नेकरें भी रखी गई हैं। इनमें से एक पिछली सदी की शुरुआती दौर की है। प्रदर्शनी में एक ब्रिटिश राजनैतिक की बीवी की इस्तेमाल की गई नेकर भी रखी गई है। इन्हें फ्रेंच निक्कर कहा जाता था। लेडी बेटी नाम की इस महिला ने अपनी डायरी में लिखा था कि इनकी मदद से उन्होंने बगदाद की महिलाओं से राब्ता

बनाया था। क्योंकि, दोनों ही एक दूसरे की जुबान नहीं समझती थीं।

1940 के आते आते नायलॉन के इस्तेमाल से महिलाओं के अंडरगारमेंट्स का रूप-रंग दोनों ही बदल गया। ये इस्मेमाल में आसान थे। धोने में आसान थे। मॉर्डन लगते थे। एडविना कहती हैं कि नायलॉन के बने अंडरगारमेंट्स को महिलाओं ने हाथों-हाथ लिया और देखते-देखते ये दुनिया भर में छा गए।

एडिवना बताती हैं कि साठ के दशक में पिश्चमी देशों में कमरबंद पहनने का चलन भी खूब रहा। इसकी वजह साफ थी, ये औरतों की उम्र छुपा लेता था ओर इसके इस्तेमाल से महिलाएं आजाद भी महसूस करती थीं। लाइक्रा के बने ये कमरबंद खूब चले।

बीसवीं सदी के सत्तर के दशक के आते-आते दुनिया भर में महिलाओं की मुक्ति के आंदोलन तेज हो चुके थे। इस आंदोलन की अगुवा महिलाओं को ब्रा भी पुरुषवादी समाज की प्रतीक लगती थी। पश्चिमी देशों में कई जगह ब्रा जलाने की मुहिम तक चलाई गई थी। हालांकि आम महिलाओं ने इससे तौबा नहीं की।

हां, इनसे नया आर्ट जरूर चलन में आ गया। जैसे इस प्रदर्शनी में रखा गया एक ऐसा रूप है जिसे देखकर आप यकीन ही नहीं करेंगे कि ब्रा को इस शेप में भी देखा जा सकता है। मगर हेलेन प्यूमैन नाम की एक आर्टिस्ट ने कांसे की बनी ब्रा को ठोक-पीटकर एकदम नया, आर्टिस्टिक लुक दे दिया है।

बहरहाल, विक्टोरिया एंड अलबर्ट म्यूजियम में लगी इस नुमाइश में आप महिलाओं के अंतर्वस्त्रों के तीन सौ सालों के इतिहास की झलक देख सकते हैं। इन्हें तब भी सेक्स अपील से जोड़कर देखा जाता था और आज भी। हां, अब आराम को भी बराबर की अहमियत दी जाती है। ■

भारत में त्योहार का कपड़ा-उद्योग पर क्या प्रभाव पड़ता है?

भारत में त्योहार फैशन डिजाइनरों के लिए नवीनतम फैशन रुझानों और ग्राहक खरीद व्यवहार के माध्यम से अपनी रचनात्मक और सौंदर्य संबंधी धारणाओं को प्रदर्शित करने के लिए बेहतरीन अवसरों में से एक है। त्योहार जीवन के विभिन्न पहलुओं का जश्न मनाने के लिए मनाए जाते हैं और संस्कृति पर आधारित होते हैं। वे अपने उत्साह, आनंद और चमक के साथ हमारे जीवन को जीवंत करते हैं।

यह मौसम परिवार और दोस्तों के साथ खास पलों का आनंद लेने और मौजुदा फैशन ट्रेंड के साथ बने रहने का है। भारत में त्योहार का हमारे कपड़ों के चुनाव और खरीदारी की आदतों पर असर पड़ता है।

सभी उत्सव धार्मिक प्रकृति के होते हैं। प्रत्येक परंपरा और विरासत की सुंदरता और महत्व उसके उत्सवों में समाहित होते हैं। भारतीय संस्कृति का हिस्सा होने से विभिन्न त्योहारों में भाग लेने के कई अवसर खुलते हैं। सांस्कृतिक विविधता के परिणामस्वरूप, प्रत्येक छुट्टी को भव्य ओर भव्य तरीके से मनाया जा सकता है। त्योहार का फैशन पर प्रभाव पडता है क्योंकि वे नए विचारों और शैलियों को आजमाने का सबसे अच्छा अवसर होते हैं।

भारतीय उत्सवों में एसो क्या है जो लोगों को पारंपरिक परिधान पहनने के लिए प्रेरित करता है? भारतीय अपनी परंपराओं को बहुत महत्व देते हैं और धार्मिक और सांस्कृतिक विशेषताओं को बहुत महत्व देते हैं। त्योहारों पर पारंपरिक कपडे पहनना एक-दूसरे के प्रति प्यार, सम्मान और प्रशंसा व्यक्त करने का एक तरीका है, साथ ही ऐतिहासिक परंपराओं का सम्मान करना है जो समय के शुरूआत से पीढियों से चली आ रही है। ये कपडे एक अलग ऐतिहासिक और सांस्कृतिक माहौल देते हैं, जिससे प्रत्यके पहनने वाले को गर्व महसूस होता है और साथ ही आकर्षक और

फैशनेबल भी लगते हैं। भारतीय त्योहार हमारे पहनाने के चुनाव को प्रभावित करते हैं और परिणामस्वरूप, हमारे खर्च करने के तरीके को भी प्रभावित करते हैं, क्योंकि हम पारंपरिक या जातीय परिधानों को पसंद करते हैं। छुट्टियों के मौसम में, महिलाओं और पुरुषों के सबसे आधुनिक फैशन को सबसे बेहतर तरीके से प्रदर्शित किया जाता है। चॅंकि फैशन व्यवसाय उत्सवों के समय के आसपास अपने नवीनतम संग्रह पेश करते है, इसलिए उत्सव फैशन के रुझानों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। त्योहार फैशन उद्योग का एक हिस्सा है, और वे भविष्य के रुझानों को प्रभावित करते हैं। ये ऐसे आयोजन हैं जिन्हें हर कोई स्टाइल और अच्छे लुक के साथ याद रखना चाहता है। सांस्कृतिक संबंधों के साथ समकालीन फैशन डिजाइन में तैयार होना भारतीय त्योहारों का बडा हिस्सा है। कई त्योहार नये फैशन और रुझानों के साथ प्रयोग करने का अवसर प्रदान करते हैं। ■



Mfrs. of:

T-Shirts, Track Suit, Caps, **Corporate Dresses, School Dresses,** Pullovers, Army Dresses, Back Pack, **Laptop Bags, PPE Kit, Mask,** Sanitizers & Also All types of **SPORTS WEAR**

We are Manufacturer, Supplier and Traders of Cotton Tracksuits, Super Poly Tracsuit, Polyester Track Suits, Pc Fleece...

YALI RAD

HO.: E-187, 1st Floor, Near Metro Pillar No. 180, Shastri Nagar, Delhi - 110052 BO.: T-203, DLF Capital Green, Moti Nagar, Delhi - 110015

Email: goyals27@yahoo.in, goyaltradings.nagar@yahoo.in Web: https://m.goyaltradingcompany.com

तमिलनाडु की नई वस्त्र-नीति होंगी तिरूपुर के अनुरूप

क्षेत्र,

जो

्यकरघा, हस्तिशिल्प, वस्त्र एवं खादी विभाग के प्रधान सचिव ने कहा है कि तिमलनाडु की नई वस्त्र नीति परिधान व्यवसाय में मूल्य-श्रृंखला में तिरूपुर की उच्च स्थिति को मजबूत करने के लिए तैयार की जाएगी।

राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में सेवा क्षेत्र का योगदान 65% है, तथा चुनौती विनिर्माण क्षेत्र के योगदान को बढ़ाने की है, क्योंकि कृषि के बाद यह ही रोजगारोन्मुखी क्षेत्र है।

जिला कलेक्टर टी.
क्रिस्टुराज के साथ, प्रधान
सचिव ने भारतीय बुनाई
मेला संघ (आईकेएफए) और
परिधान निर्यात संवर्धन परिषद
(एईपीसी) द्वारा संयुक्त रूप से
आयोजित 51वें भारत अंतर्राष्ट्रीय बुनाई
मेले का उद्घाटन किया, जो कि थीम:
नवाचार और परिपत्रता द्वारा हमारे ग्रह
का संरक्षण पर आधारित तीन दिवसीय
कार्यक्रम है।

प्रधान सचिव ने आशा व्यक्त की कि
35000 करोड़ रुपये के निर्यात कारोबार
और 25000 करोड़ रुपये के घरेलू व्यापार
का योगदान देने वाला तिरूपुर ईएसजी
(पर्यावरण और सामाजिक शासन) में
अग्रणी भूमिका निभाएगा, तथा परिधान
क्षेत्र में अधिक निवेश आकर्षित करेगा, जो

महिला सशक्तिकरण में योगदान देता है तथा कार्यबल में उनकी हिस्सेदारी 80% है।

बाद में मीडियाकर्मियों से बात करते हुए प्रधान सचिव ने कहा कि तिमलनाडु में कताई राज्य सरकार ने मशीनरी के आधुनिकीकरण का कार्य करने वाले उद्योगों के लिए 6%

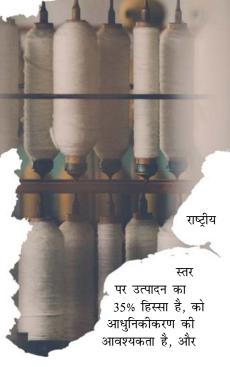
अनुदान देने हेतु 500 करोड़ रुपये की धनराशि अलग रखी है।

राज्य सरकार ने औद्योगिक नीति में तकनीकी वस्त्र उद्योग तथा निर्यात को बढ़ावा देने पर जोर दिया है।

टीई के अध्यक्ष केएम सुब्रमण्यम को उम्मीद है कि तिरुपुर के विनिर्माताओं द्वारा मानव निर्मित फाइबर (एमएमएफ) में विविधीकरण में मौजूदा 20% से 10% अंकों की वृद्धि दर्ज की जाएगी।

एनआईएफटी (राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान) पूर्व छात्र संघ के सचिव रोहित अनेजा, आईकेएफए के संरक्षक रोहिणी सूरी और ट्राईबर्ग के समूह नेता संजय शुक्ला का जोर तिरुपुर परिधान निर्माताओं को मानव निर्मित फाइबर की ओर तेजी से विविधीकृत करने पर था।

श्री शुक्ला ने कहा कि वैश्विक व्यापार का 70% एमएमएफ में है, तथा पॉलिस्टर के खेल पर नकेल कसने से तिरुपुर और देश विकास के सही रास्ते पर आ जाएगा। ■





CHARLIE

Exclusive Socks

HIGH QUALITY FASHIONABLE SOCKS

Available in Exclusive Designs & Colours for Ladies, Gents and Children

3977, Gali Ahiran, Pahari Dhiraj, Delhi-110 006 ● Ph.: (0) 011-43704319 (M) 9818285195, 7982917958, 9625442900, 9643689774



Moments of Comfort







INTRODUCING ROMANCE INNERS WHERE ELEGANCE MEETS PASSION

UNCOMPROMISED QUALITY
EMPOWERING EVERY WOMAN





FOLLOW US ON:









भारत ने दुनिया को दिया कपड़ा: ऋग्वैदिक ऋषि ने शुरु की कपास की खेती, सोने के बराबर इसकी कीमत, सम्राट-रानियां भी हुईं मुरीद

पास दुनिया की उन चुनिंदा फसलों में है, जिसकी खेती इंसानों ने सबसे पहले शुरू की और जो धरती के अधिकतर हिस्सों में मौजूद है। पेरू में करीब 8 हजार साल पुराना सूती कपड़ा पाया गया। मेक्सिको की एक गुफा में पुरातत्वविदों को साढ़े 7 हजार साल पुराने कपास के बीज मिले।

मोहनजोदड़ों में चांदी और कॉपर के बर्तनों से लिपटे 7 हजार साल पुराने सूती कपड़े के टुकड़े के साथ ही सूत कातने वाली तकली भी पाई गई। सिंधु घाटी सभ्यता में भी 5 हजार साल पहले कपास की खेती के सबूत मिल चुके हैं। इसका जिक्र ऋग्वेद में भी है। माना जाता है कि ऋग्वेद के दूसरे मंडल की रचना करने वाले ऋषि गृत्समद ने ही पहली बार कपास की खेती की शुरुआत की और उसके रेशों से सूत भी तैयार किए।

सफेद सोना है कपास: कपास के बीज से निकले रेशे से रूई और उससे सूती धागे तैयार किए जाते हैं। इन्ही धागों से बनते हैं नर्म-मुलायम, आरमदेह कपड़े। कॉटन गर्मियों में ठंडक पहुंचाता है और सर्दियों में शरीर की गर्माहट को बचाए रखता है। रूमाल, टी-शर्ट, जीन्स से लेकर शॉल, चादर और रजाई तक कॉटन से क्या कुछ नहीं बनता। इसकी इन्हीं खूबियों की वजह से इसे सफेद सोना भी कहते हैं।

'कुतुन' से मिला 'कॉटन' नामः दो हजार साल पहले यानी पहली सदी में अरब व्यापारियों ने भारत से कॉटन ले जाकर पूरी दुनिया में बेचना शुरू किया। अरबी में कपास को 'कुतुन' कहा गया, यही 'कुतुन' अंग्रेजी में 'कॉटन' कहलाया। अरब व्यापारियों के बाद रोम के कारोबारी भी कॉटन की तलाश में भारत पहुंचे। साल 327 में सिकंदर भारत पर हमला करने आया, जिसके बाद ग्रीस के साथ भी कॉटन का कारोबार शुरू हो गया। इस तरह कॉटन लग्जरी कपड़ा बन गया।

पेड़ों से लटके मेमनों से निकलता है

कपास: व्यापारियों के जिएए कपास उन देशों तक भी पहुंच गई, जहां इसकी खेती नहीं होती थी। वहां इससे बने आरामदेह कपड़ों की धूम मच गई, लेकिन व्यापारियों ने यह राज छुपाए रखा कि कपास आखिर तैयार कैसे होती है। आधी-अधूरी जानकारी और कल्पनाओं के बूते मजेदार किस्से गढ़ दिए गए।

करीब ढाई हजार साल पहले यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस ने अपनी किताब में लिखा कि भारत में ऐसे भारी-भरकम पेड़ पाए जाते हैं, जिनसे भेड़ों का ऊन निकलता है। लंबे समय तक लोग इस आधे सच्चे-आधे झूठे किस्से पर विश्वास करते रहे।

14वीं सदी में यूरोपीय यात्री जॉन मैंडविल तो और चार कदम आगे निकल गए और अपनी किताब में लिखा कि भारत में ऐसे अनोखे पेड़ उगते हैं, जिसके शाखाओं के सिरों परे छोटे-छोटे मेमने पैदा होते हैं। जब मेमनों को भूख लगती है, तो लचीली शाखाएं नीचे झुक जाती हैं, ताकि मेमने घास चर सकें। पेड़ से लटके इन्हीं मेमनों से कपास मिलता है। उन्होंने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय रुझानों के अनुरूप विनिर्माण और प्रसंस्करण के नए तरीकों में अनुसंधान और विकास पर ध्यान केंद्रित करने के लिए एक डिजाइन केंद्र के लिए 25 करोड़ रुपये की धनराशि निर्धारित की गई है। भारतीय निट मेला ऐसोसिएशन के अध्यक्ष ए. शक्तिवेल ने कहा कि मेले में भाग लेने वाले 100 खरीददार घरानों/ऐजेंटो में से 40 अन्य देशों से थे। श्री शक्तिवेल ने कहा कि तिरुपुर निर्यातक संघ 'हरित तिरूपुर' की दिशा में अपनी पहल को आगे बढ़ाने के लिए उत्सुक है। उन्होंने उम्मीद जताई कि सरकार ईसीजी के क्षेत्र में तिरूपुर में सुधार लाने के उपायों के लिए उनके अनुरोध पर विचार करेगी।

कॉटन इंडस्ट्री पर कब्जा जमाने के लिए अंग्रेजों ने तबाह किया मलमल

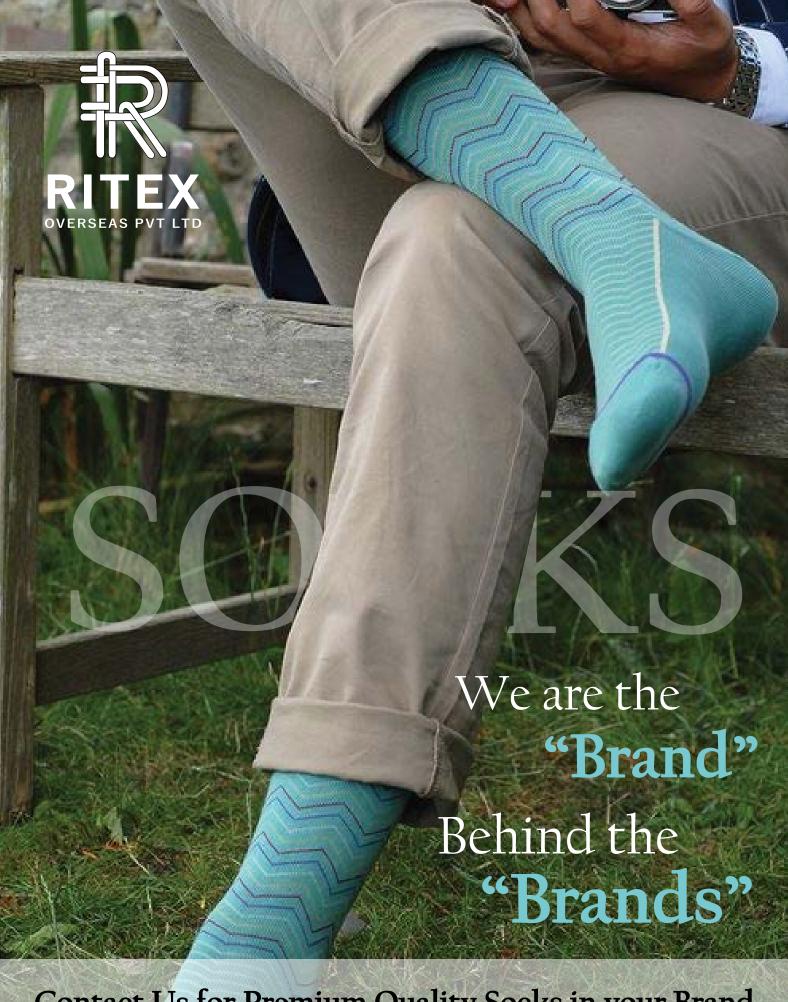
मलमल के बिना कपास की कहानी अधूरी है। 12वीं सदी में चीन के सॉन्ग राजदाबार में रहे 'चाउ चू-फेई' ने अपनी किताब में भारत के वेंगी साम्राज्य का उल्लेख किया। वक्त चोल साम्राज्य का हिस्सा रहा वेंगी चीन और अरब के बीच टेक्सटाइल के कारोबार के लिए प्रसिद्ध था। मछलीपट्टनम का बंदरगार भी वेंगी में ही था, जिसे उन दिनों मसूलीपट्टनम कहते थे और कई देशों के व्यापारी यहां से कपास खरीदकर ले जाते थे।

मसूलीपट्टनम के नाम से ही यहां तैयार होने वाले खास कपास को पहले 'मसिलन' कहा गया, जो आगे चलकर 'मलमल' बन गया। कहते हैं कि ढाका की मलमल से तैयार साड़ी अंगूठी के बीच से निकल जाती थी। मुगल शासकों से लेकर नेपोलियन की पत्नी तक इसके मुरीद थे। मलमल इतनी महीन होती थी कि लोग इस डर इसे पहनने से सक्चाते थे कि कहीं वह निर्वस्त्र न दिखें।

आजादी की लड़ाई में हथियार बनी खादी और चरखा

कॉटन की इतनी अहमियत देख महात्मा गांधी ने इसे आजादी की लड़ाई में अपना अहम हथियार बना लिया। उन्होंने कपास से तैयार स्वदेशी कपड़ों को बढ़ावा देना शुरू कर दिया।

1916 में साबरमती आश्रम बना तो वहां चरखा भी लाया गया। आश्रम में रखने वाले चरखे से वह सूत कातते और स्वतंत्रता संग्राम की डोर मजबूत करते। 1921 में महात्मा गांधी ने विदेशी कपड़ों की होली जलाई और कांग्रेस ने पूरे देश में 20 लाख चरखे बांटने का प्रस्ताव पारित किया। 1925 में अखिल भारतीय चरखा संघ की स्थापना भी हो गई। ■



Contact Us for Premium Quality Socks in your Brand

info@ritexoverseas.com

73600 75600







Services Provided

Model & Celebrity Shoot • Corporate Profile (Print & Electronic) • TV & Newspaper Advertisements

Catalogue • Leaflet n Brochure • Portfolio • Banner • Corporate Events • Fashion Shows

All kinds of Packaging and Printing Services



lacksquare India's Leading Magazine dedicated to Hosiery & Garment Industry since 1973 lacksquare

YOU ARE INVITED!

Sleep & Lounge

Active & Sports

Handkerchies





INNERWEAR COMFORTWEAR SPORTSWEAR

24 25 26 FEB 2025

YASHOBHOOMI CONVENTION CENTRE DWARKA, NEW DELHI







FOR MORE DETAIL

© 9920836252 | 7506399929 | 808<mark>0899927</mark>

events@peppermint.co.in



Shapewear & Thermal



Readymade Garment Exports to Drive India's Textile Sector Expansion

India's textile sector is poised for a significant expansion in the coming years, fueled by an impressive 11% year-on-year growth in readymade garment (RMG) exports. This growth, as revealed by the August trade data, marks a promising trend for the country's textile and apparel industries. The Ministry of Textiles has highlighted that a combination of government schemes, policy initiatives, and large-scale investments will help the sector achieve its ambitious target of reaching a \$350 billion market size by 2030.

Steady Growth in Readymade Garment Exports

According to the Ministry of Textiles, readymade garment exports have recorded a robust 11% growth over the previous year, signaling the global demand for Indian apparel products. This growth comes at a crucial time when India is working to strengthen its position in the international textile market. The August trade data reflects the steady pace at which the garment industry is expanding, with increasing orders from traditional markets like the United States and the European Union, as well as emerging markets in

Asia, Africa, and Latin America.

Expansion into Emerging Sectors: Technical Textiles

Apart from the traditional textiles and garment sector, the Ministry is also focusing on emerging areas like technical textiles, which hold immense potential for future growth. Technical textiles refer to high-performance fabrics used in industries such as healthcare, automotive, aerospace, construction, and agriculture. These textiles are engineered for specific applications, such as fire resistance, moisture management, and durability, making them essential for various high-demand sectors.

PM MITRA Park: A Catalyst for Transformation

One of the most ambitious projects under the government's textile push is the PM MITRA Park scheme. This initiative aims to establish **seven large-scale, integrated textile parks** across the country. Each park will be equipped with state-of-the-art infrastructure, including common facilities for water treatment, testing, and training centers. These parks are

designed to attract investment from both domestic and global players, providing them with the necessary infrastructure and logistics support to scale their operations.

The Road Ahead: Challenges and Opportunities

While the growth in RMG exports and the government's initiatives paint a promising picture, challenges remain. The textile sector faces stiff competition from countries like China, Bangladesh, and Vietnam, which have established themselves as major players in the global market. Additionally, issues such as fluctuating cotton prices, labor shortages, and outdated technology in some segments of the industry continue to pose challenges.

As the textile sector continues to evolve, it remains one of India's most important industries, contributing to economic growth, job creation, and global trade. With the right support, India's textile industry is well on its way to becoming a global powerhouse.

TGENX: URBAN









→ For Trade Enquiries ←

KANGAROO POCKET HOODIE

⑥ U-137

+91 97871 00030 🖾 info.luxglobal.co.in

Mfg. & Mktd. by LUX INDUSTRIES LTD - J.M. HOSIERY DIVISION 11/5, Shastri Nagar, Angeripalayam Main Road, Tirupur - 641602, Tamil Nadu, India

catch us on







₩ U-166

JACQUARD PRINT & EMB FULL SLEEVE SWEATSHIRT











FOR TRADE ENQUIRIES CALL US



Indian Hosiery Industry Faces Inflationary Pressures Amid Rising Raw Material Costs

The Indian hosiery industry is currently navigating a challenging landscape marked by rising raw material costs, particularly cotton and synthetic fibers, impacting production and pricing strategies. As manufacturers brace for a tumultuous winter season, concerns over profitability and competitiveness loom large.

Rising Costs: A Double-Edged Sword

In recent months, the price of cotton has surged by approximately 20%, primarily due to a combination of factors, including a decline in domestic production, global supply chain disruptions, and increased demand from both domestic and international markets. Synthetic fibers, essential for blended hosiery products, have also seen a price spike of around 15% due to fluctuations in crude oil prices. Rajiv Kumar, a prominent hosiery manufacturer based in Ludhiana, expressed his concerns about the impact of rising costs on the industry. "We are facing unprecedented challenges in maintaining our margins. With the cost of raw materials increasing, we may have to pass some of these costs onto consumers, which could affect

our sales volume," he stated.

Export Challenges: Competitive Edge at Risk

The inflationary pressures are not only affecting local markets but also posing significant challenges for Indian hosiery exports. The country's export-oriented hosiery industry, primarily centered in regions like Ludhiana and Tiruppur, relies heavily on competitive pricing to secure international contracts. According to data from the Ministry of Textiles, India's hosiery exports reached \$8 billion in FY23, but industry experts warn that this figure could decline in FY24 if the rising costs are not addressed. "Our primary competitors, such as Bangladesh and Vietnam, have lower production costs, making it difficult for us to compete in pricesensitive markets," explained Anjali Mehta, an analyst at the India Brand Equity Foundation (IBEF).

Government Intervention: A Lifeline for Manufacturers?

In light of these challenges, industry leaders are calling for government intervention to mitigate the impact of rising raw material costs. Suggestions include revisiting import duties on synthetic fibers and cotton, as well as providing financial assistance to manufacturers facing cash flow issues. The government has already taken some steps to support the industry, including the announcement of an increase in the Production Linked Incentive (PLI) scheme funding for the textile sector. However, many manufacturers believe that more targeted measures are necessary to address the immediate challenges posed by inflation.

Innovative Solutions: Finding Alternatives

Amidst these pressures, some manufacturers are turning to innovative solutions to remain competitive. For instance, companies are exploring alternative materials, such as recycled fibers, which not only help in reducing costs but also appeal to the growing segment of environmentally conscious consumers. Investing in sustainable materials is a win-win situation for us. It helps us manage costs and aligns with the changing preferences of consumers. This strategic shift may help manufacturers buffer against the volatility of traditional raw material prices. As the Indian hosiery industry navigates these turbulent times, the focus remains on finding a balance between maintaining quality, managing costs, and sustaining competitiveness in the global market. With the winter season approaching, manufacturers are under pressure to adapt quickly to the changing landscape.

MPR WOOLS

KID'Z - BACHPAN

KIDS WOOLEN INNER/UPPER WEARS

DEALERS/AGENTS ENQUIRY SOLICATED.



Commission / Buying Agent & Trader of: COTTON - WOOL - ACRYLIC YARNS & GARMENTS



MPR AGENCIES PVT. LTD.

Parental Firm: MITHAN LAL PIAREYLAL AGENCY (Since 1967)

5792, South Basti Harphool Singh, Sadar Bazar, Delhi - 110 006 • Email: acrowool@rediffmail.com, ddhruv.tara@gmail.com

Contact Person - VINOD AGGARWAL - 09811004622, DHRUV AGGARWAL - 09899383322



e-Invoicing TCS / TDS ★



SOME OF THE FEATURES

GST RETURNS

ITC 04

LOT / PRODUCT COSTING

INVENTORY MANAGEMENT

BAR CODING

SMART SMS & EMAIL

KOLKATA | TIRUPPUR | LUDHIANA AHMEDABAD | DELHI | JAIPUR

GET IN TOUCH









Tiruppur Hosiery Industry Faces Setback Due to Cotton Shortage in 2024

Tiruppur, India's hosiery capital, is currently grappling with a severe cotton shortage that threatens to derail production and export targets for 2024. As one of the country's largest producers of hosiery products, including socks, innerwear, and athleisure apparel, Tiruppur's dependence on cotton has placed it at the center of the current supply crisis.

The Cotton Crisis: A Looming Threat

The ongoing cotton shortage, caused by reduced sowing during the kharif season, has left many hosiery manufacturers in Tiruppur struggling to meet demand. According to the Ministry of Agriculture, cotton sowing in 2024 fell to 11.24 million hectares, down from 12.36 million hectares in the previous year, leading to a projected drop in cotton production by at least 10%. This shortage has had a direct impact on the availability of raw materials for Tiruppur's hosiery manufacturers.

Rajesh Nair, a senior executive at a leading hosiery manufacturer in Tiruppur, expressed his concerns: "Cotton prices have surged by 15% in the last quarter, and this is significantly affecting our production costs. If the supply issues persist, we might have to cut down on production, which would impact our ability to meet export orders."

Government Intervention: Is It Enough?

To combat the cotton crisis, the Indian government has introduced a series of measures aimed at supporting the textile and hosiery industry. The government has increased the import quota for cotton, reduced import duties, and allocated additional funds under the Production Linked Incentive (PLI) scheme to help manufacturers manage rising costs.

However, industry leaders argue that these measures may not be enough to address the underlying supply issues. "While the government's support is appreciated, the reality is that without a more stable domestic cotton supply, we are still at risk of losing our competitive edge in the global market," said Shyam Sundar, President of the Tiruppur Exporters Association (TEA).

Impact on Exports: A Challenging Year Ahead

India's hosiery exports, which contribute significantly to the overall

textile export market, are also expected to take a hit due to the cotton shortage. Tiruppur alone accounts for nearly 90% of India's total hosiery exports, making any disruption in production a serious concern for the country's export goals.

In FY23, India's hosiery exports saw a growth of 12%, driven largely by increased demand from the US, Europe, and the Middle East. However, with the current supply chain issues, experts predict that export growth could slow to around 7-8% in FY24, far below the industry's previous expectations.

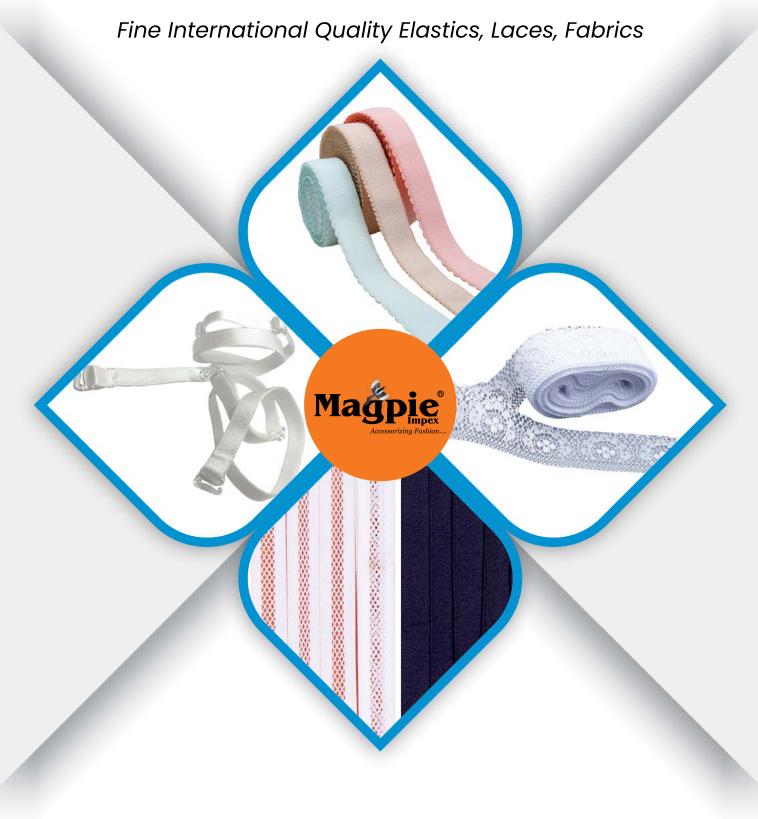
"Given the current situation, many exporters are worried about fulfilling their existing orders, let alone securing new ones," said Arvind Krishnan, a leading hosiery exporter in Tiruppur. Delays in production due to cotton shortages could lead to cancellations and damage our reputation in the international market.

What Lies Ahead for Tiruppur's Hosiery Industry?

Despite the challenges, there is hope that the situation could improve in the coming months. The government is working on long-term strategies to enhance cotton cultivation, including the introduction of advanced seed technology and better irrigation systems. In addition, many manufacturers are exploring alternatives to cotton, such as synthetic blends, to mitigate the impact of the shortage.

However, for now, the future remains uncertain for Tiruppur's hosiery industry. Manufacturers and exporters are keeping a close eye on the cotton supply situation, hoping that a combination of government intervention and market adjustments will help stabilize the industry.



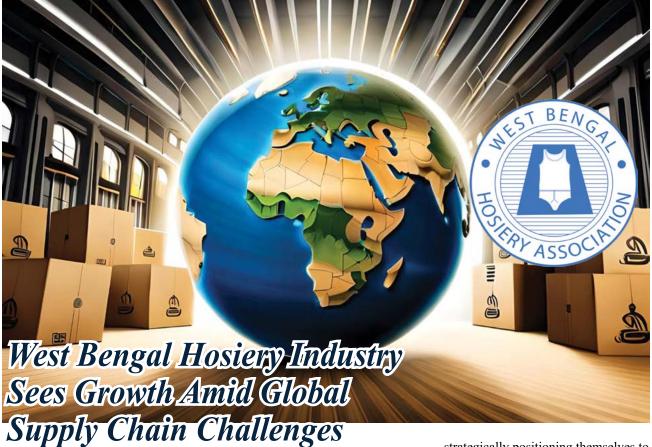












The hosiery industry in West
Bengal is navigating a complex
landscape as it adapts to ongoing
global supply chain challenges while
positioning itself for significant
growth. Despite facing hurdles
such as rising raw material costs
and fluctuating demand, the state's
manufacturers are poised to capitalize
on emerging opportunities within both
domestic and international markets.

Current Landscape: Resilience Amidst Disruption

The West Bengal hosiery sector has historically been a backbone of the state's economy, contributing significantly to employment and revenue. Recent trends indicate resilience, allowing the industry to weather global disruptions, particularly those stemming from the COVID-19 pandemic and geopolitical tensions affecting supply chains. Reports indicate that production levels have begun to stabilize, with many factories investing in upgraded machinery and technology to improve output and reduce dependency on imported materials.

Government Support and Policy Initiatives

The state government has recognized

the importance of the hosiery sector in driving economic growth and has introduced several initiatives to support manufacturers. Financial assistance programs are aimed at helping SMEs modernize their operations, enhancing productivity, and increasing output. Furthermore, initiatives to streamline regulatory processes are facilitating faster approvals for new projects, allowing manufacturers to expand their capacities more efficiently.

Sustainability as a Key Focus

Sustainability is becoming increasingly critical in the hosiery sector, with manufacturers actively seeking ways to reduce their environmental impact.

Many companies in West Bengal are transitioning towards ecofriendly materials and sustainable production practices. The emphasis on sustainability aligns with a growing consumer preference for environmentally responsible products, which is expected to drive sales in the coming seasons.

Opportunities in Export Markets

As global demand for hosiery products continues to rebound, West Bengal's manufacturers are strategically positioning themselves to capture a larger share of international markets. Recent trade agreements between India and various countries are paving the way for increased export opportunities. With the government's focus on boosting exports, the hosiery industry is being encouraged to tap into new markets, particularly in Europe and North America.

Challenges Ahead: Navigating Global Dynamics

Despite the promising outlook, the West Bengal hosiery industry faces several challenges that must be addressed to ensure sustained growth. Fluctuating raw material prices, particularly cotton and synthetic fibers, remain a pressing concern. Manufacturers are encouraged to explore alternative sourcing strategies, including partnerships with local farmers and cooperative models, to secure a more stable supply chain.

In the ever-evolving landscape of the hosiery sector, West Bengal's adaptability and forward-thinking strategies will be key in shaping its success story, making it a critical player in India's textile narrative as the country aims to enhance its global standing in the industry.



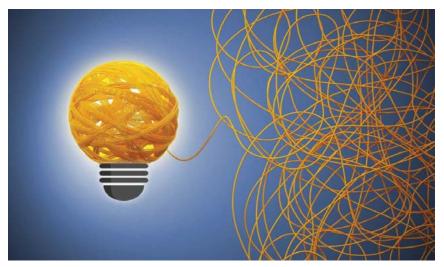












Ludhiana Hosiery Industry Thrives Amid Economic Challenges with Innovations and Collaborations

The hosiery industry in Ludhiana is experiencing a remarkable turnaround as manufacturers embrace innovation and collaboration to overcome economic challenges.

Despite facing headwinds such as rising production costs and labor shortages, local firms are showcasing resilience and adaptability, setting a positive tone for the future of the sector.

Innovation at the Core

In response to market demands for high-quality, sustainable products, Ludhiana's hosiery manufacturers are investing in advanced technologies and eco-friendly practices. Many companies are shifting towards sustainable materials and energy-efficient production methods, aligning with global trends toward environmental consciousness.

"Adopting innovative technologies has allowed us to improve our production efficiency and reduce waste. We are focusing on sustainable practices, which not only help the environment but also attract a growing segment of eco-conscious consumers," a local manufacturer noted.

Collaborative Efforts Boost Competitiveness

Collaboration among local manufacturers has become a vital strategy to enhance competitiveness. Industry associations and clusters are facilitating knowledge sharing and resource pooling, enabling smaller firms to access cutting-edge technologies and training programs.

"The spirit of collaboration has strengthened our industry. By working together, we can overcome challenges that no single company could tackle alone. This unity is essential for boosting our global competitiveness," said a representative from the local industry association.

Positive Export Trends

Ludhiana's hosiery exports are witnessing an encouraging trend, with reports indicating a steady increase in shipments to international markets. This growth is fueled by a surge in demand for Indian hosiery products, particularly in the US and European markets, where quality and sustainability are prioritized.

"Exporting our products has opened new avenues for growth. We've received positive feedback from international buyers, which motivates us to keep innovating," stated an export manager for a prominent hosiery brand.

Skill Development Initiatives

To address labor shortages and equip the workforce with necessary skills, various skill development initiatives have been launched in collaboration with educational institutions and government agencies. These programs aim to train new entrants and upskill existing workers, ensuring a competent workforce for the future.

"The investment in skill development is crucial. We need a skilled workforce that can adapt to new technologies and meet the evolving needs of the market," emphasized a training coordinator at a local vocational institute.

Government Support and Policy Framework

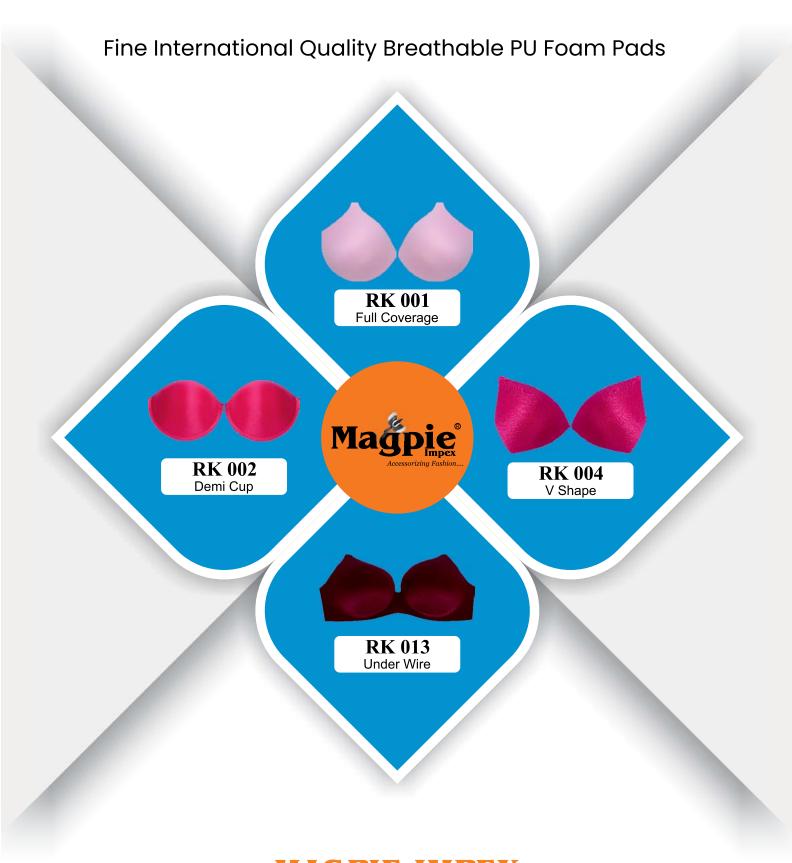
The government has recognized the importance of the hosiery sector in Ludhiana's economy and has initiated supportive policies to bolster growth. Increased funding for research and development, as well as subsidies for adopting sustainable practices, are among the measures being introduced.

"Government support is vital for our industry to thrive. With the right policies in place, we can enhance our capabilities and tap into new markets," remarked a local industry expert.

Looking Ahead: A Bright Future

The outlook for the Ludhiana hosiery industry is positive, with manufacturers optimistic about the future. By continuing to embrace innovation, collaborate effectively, and invest in skill development, the industry is well-positioned to navigate challenges and seize opportunities in a dynamic global market.

TRENDY, INSPIRING CREATIONS TO ENHANCE YOUR FASHION COLLECTION











Low Cotton Sowing in Kharif Season Threatens India's Textile Export Targets Amid Production Decline



India, a global player in the textile industry, faces a significant challenge in achieving its ambitious \$40 billion textile export target for FY25. With cotton sowing dropping to 11.24 million hectares as of mid-September, compared to 12.36 million hectares during the same period last year, concerns are mounting about the industry's future prospects.

Declining Cotton Production

The cotton sowing crisis adds to an already existing trend of reduced cotton production in India. In FY20, cotton production peaked at 36 million bales (each weighing 170 kg). However, it fell to 35 million bales in FY21 and continued to decline to 31 million bales in FY22. Although there was a brief recovery in FY23 with production increasing to 33 million bales, the numbers dropped again in FY24 to 32 million bales.

Impact on Textile Exports

India's textile exports have fluctuated in recent years. After hitting a high of \$41.12 billion in FY22, exports declined to \$35.55 billion in FY23 and further to \$34.40 billion in FY24. The country's target to exceed \$40 billion in textile exports by FY25 now appears increasingly difficult to achieve. Low cotton production directly impacts India's textile export competitiveness. Cotton-based textiles account for about 55-60% of the country's total textile exports.

Challenges Facing Cotton Farmers

The challenges in cotton farming have grown multifaceted. Outdated seed technology, high labour costs, and more extended cultivation times are making cotton cultivation less appealing to farmers, many of whom are switching to alternative crops such as soybean and paddy. "Compared to soybean farming, cotton requires more intervention and resources, making it less efficient," said Ganesh Nanote, a farmer in Maharashtra's Vidarbha region.

The Road Ahead: Export Targets and Government Measures

India's textile and apparel industry is a vital part of the country's economy, contributing 2.3% to the GDP, 13% to industrial production, and 12% to exports. The sector's growth is critical for India's economic goals, with the government aiming to grow the market to \$350 billion by 2030 and increase textile exports to \$100 billion in the same time frame.

However, experts believe that the current scenario paints a grim picture. "Given the low cotton sowing and reduced production, achieving the \$40 billion export target by FY25 will be a tough task. To counter the decline, the government has increased its budget allocation for the textile sector by ₹974 crore, bringing the total to ₹4,417 crore in the Union Budget 2024-25.

Potential for Recovery and Growth Despite the challenges, India

remains one of the world's top textile exporters. The Commerce Ministry's India Brand Equity Foundation (IBEF) projects that the market for Indian textiles and apparel will grow at a 10% CAGR. For instance, the establishment of dedicated cotton testing labs and the introduction of improved seed varieties could boost yields, while technology-driven interventions could lower the cost of cotton production. However, the success of these measures will largely depend on their timely implementation and widespread adoption among cotton farmers.

Key Takeaways:

- Cotton sowing has decreased by over 9% compared to the previous year, raising concerns about India's textile export goals.
- Reduced cotton production is expected to negatively impact the country's competitiveness in global markets, particularly for cotton-based textiles.
- Government initiatives, including increased budget allocations and research funding, aim to support the sector, but the results will take time to manifest.

As India battles these challenges, the country's textile sector is at a critical juncture, with its future depending on the effective implementation of industry reforms and the global demand for Indian textiles.





MAGPIE IMPEX









s the festive season of Diwali approaches, it's time to not only illuminate your homes but also your wardrobes with the latest in festive fashion. This year, hosiery adds a modern twist to traditional Diwali dressing, offering comfort, elegance, and versatility to complement the festive spirit.

Diwali is a time for vibrant colors, intricate designs, and traditional wear, but with fashion constantly evolving, incorporating contemporary elements is the perfect way to stay stylish while honoring the festival's essence. Hosiery, often considered a staple for winter wear, has made its mark in Diwali fashion with elegant, breathable pieces that can be paired with ethnic attire.

Why Hosiery for Diwali? 1. Comfort Meets Style

With the many celebrations and gatherings that Diwali brings, comfort is key. Hosiery, known for its stretchy and body-hugging fit, offers unrestricted movement whether you're lighting diyas, performing puja, or dancing the night away at a family gathering. Hosiery is versatile

Fashion Trends with Hosiery Flair

enough to pair with traditional kurtas, flowy anarkalis, or even chic sarees.

2. Perfect for Layering

November and December bring a subtle chill to the air, especially in certain parts of India. Light hosiery layers can be a fashion-forward way to stay warm while still flaunting your ethnic outfits. Printed leggings can be worn under tunics or short kurtas for a fusion vibe, allowing you to mix and match textures and designs.

3. Elevating the Traditional Look Hosiery doesn't have to be limited to solid colors. This Diwali, explore hosiery with intricate detailing, embroidery, and festive motifs like paisleys, florals, and geometric patterns that blend beautifully with ethnic attire.

Trending Hosiery Looks for Diwali

1. Sheer Elegance: Embellished **Tights**

One of the hottest trends this Diwali is sheer hosiery embellished with sparkling accents. From delicate rhinestones to subtle metallic threads woven into the fabric, embellished tights can bring a touch of glam to a simple outfit.

2. Festive Florals: Printed Hosiery

Floral prints never go out of style, especially during festive seasons. Printed tights and leggings in rich, vibrant colors like maroon, emerald green, and deep purple are perfect for pairing with flowy kurtas or long tunics.

3. Lace Stockings: Subtle Glamour Lace is timeless, and lace hosiery can add a hint of vintage charm to your

Diwali outfit. Whether you're going for a classic saree or a contemporary Indo-western look, lace stockings or tights can create a stunning contrast with silk, cotton, or even velvet fabrics.

4. Shimmer and Shine: Metallic Hosiery

For those who love to stand out during Diwali parties, metallic-finish hosiery is the way to go. With a subtle sheen or full-on sparkle, these can be paired with both long and short festive dresses or skirts, adding a glamorous edge.

How to Style Hosiery for Diwali **Festivities**

- Under Sarees: If you're opting for a saree but want to add a modern touch, pair it with sheer hosiery. Choose stockings with delicate shimmer or lace patterns to create a seamless blend of elegance and comfort.
- With Anarkalis and Lehengas: Anarkalis and lehengas are Diwali staples, and hosiery can enhance these traditional outfits with a contemporary twist. Opt for tights or leggings in complementary colors that feature festive designs.
- With Indo-Western Outfits: For those who love fusing traditional and western styles, hosiery can be the perfect accessory. A short, embroidered tunic with patterned leggings or fishnet tights adds a playful yet elegant touch.

Sustainability Meets Fashion: Eco-Friendly Hosiery for Diwali

As sustainability becomes an essential part of fashion, why not incorporate eco-friendly hosiery into your Diwali wardrobe? Many brands are now offering hosiery made from sustainable materials like organic cotton or bamboo fibers. So, this season, embrace the magic of hosiery and let your style shine as brightly as the divas.



Fine International Quality Ring Sliders, Ring Adjuster, Designer Bow



MAGPIE IMPEX









Winter Warmth: Hosiery Trends to Keep You Cozy and Stylish

s the air turns crisp and the days grow shorter, winter is just around the corner. While the cold season brings cozy nights and hot beverages, it also calls for a wardrobe revamp—one that balances warmth and style. Hosiery, often seen as a seasonal essential, is your go-to choice for elevating your winter wardrobe with comfort and versatility. Here's a look at the top hosiery trends to embrace this winter, ensuring you look chic while keeping cozy!

1. Classic Tights: The Winter Staple

Tights are a winter wardrobe essential that never goes out of style. This season, classic tights get an upgrade with bold patterns, luxurious fabrics, and subtle textures that add sophistication to any outfit.

2. Statement Tights: Bold and Playful

For those who love to make a

statement, this winter brings a variety of exciting hosiery options that go beyond the basics. Patterned tights featuring polka dots, geometric shapes, florals, or even animal prints can turn a simple outfit into a fashion-forward ensemble.

3. Cozy Leggings: Your Winter Companion

When the temperatures drop, nothing beats the comfort and warmth of leggings. This season, leggings come in a variety of styles, textures, and fabrics, ensuring you stay snug while looking effortlessly chic.

4. Thermal and Fleece-Lined Leggings

For those especially cold days, fleecelined and thermal leggings are a must. These leggings provide an extra layer of insulation while remaining lightweight and breathable, making them perfect for layering under dresses, tunics, or even long coats.

5. Leather and Faux Leather Leggings

If you're looking to add an edgy, modern twist to your winter wardrobe, leather or faux leather leggings are a fantastic choice. They offer warmth while adding a sleek, contemporary vibe.

6. Knit Hosiery: Soft, Warm, and Stylish

Knit hosiery, including cable-knit leggings and textured knee-high socks, is an excellent way to stay warm without compromising on style. Perfect for layering under skirts or pairing with boots, knit hosiery adds a rustic, cozy charm to winter outfits.

7. Sheer Hosiery: Elegance with a Winter Twist

If you prefer something lighter but still need coverage, sheer hosiery offers a delicate and elegant option for winter. Sheer tights with intricate patterns, such as lace, florals, or polka dots, can add sophistication to a formal winter outfit without overwhelming it.

8. Hosiery Layering: Mixing Fabrics and Textures

Layering is key during the winter months, and hosiery is an excellent base layer for building stylish, multidimensional outfits. Start with a pair of thermal tights or leggings and layer them under skirts, dresses, or tunics.

9. Hosiery Socks: Fashion Meets Functionality

Winter calls for layering up from head to toe, and hosiery socks are the perfect way to keep your feet warm while adding a dash of style. Knee-high socks are a popular choice, especially when worn with boots or over tights for extra warmth. They come in a range of materials—from classic cotton to wool blends and cashmere, making them a luxurious choice for winter comfort.

10. Hosiery for Active Winter Days

For those who stay active during winter, performance hosiery offers both warmth and flexibility. Compression leggings, moisture-wicking tights, and sports hosiery are ideal for winter workouts, outdoor runs, or yoga sessions.

How to Care for Your Winter Hosiery

To ensure your hosiery lasts throughout the season, it's important to take care of these delicate items. Always wash hosiery in cold water, either by hand or in a mesh laundry bag on a gentle cycle. Avoid wringing or twisting them, as this can damage the fibers.

As winter approaches, hosiery offers a versatile and fashionable solution to staying warm while looking stylish. Whether you're a fan of classic tights, cozy leggings, or bold statement pieces, there's a hosiery option for every occasion this winter. From city streets to festive gatherings, let hosiery be your winter style companion, keeping you cozy and chic all season long!







MAGPIE IMPEX









In the world of fashion, where clothing trends evolve with every season, there's one staple that often goes underappreciated—hosiery. But for those in the know, hosiery is more than just a functional accessory. It's a statement, a blend of comfort and style that enhances any outfit. Hosiery has transformed from the realm of necessity to becoming a critical fashion element, which is why hosiery magazines-and in particular, The Hosiery Times—play an indispensable role in the lives of manufacturers, wholesalers as well as retailers in the field of hosiery and garment industry.

Why Hosiery Magazines Are Essential

1. A Compre hensive Guide to Trends

Hosiery trends may not always make it to the front page of mainstream fashion magazines, but they are an integral part of the style ecosystem. Whether it's the comeback of fishnet tights, the growing demand for compression socks, or the rising interest in eco-friendly fabrics, hosiery has quietly been shaping fashion conversations.

The Power of Hosiery Magazines: Why the Hosiery Times Should Be on Your Shelf

At The Hosiery Times, we recognize this. We dedicate every issue to highlighting the latest trends and innovations in hosiery.

Whether it's the timeless elegance of sheer stockings or the

Whether it's the timeless elegance of sheer stockings or the bold, eye-catching patterns now gracing runways, our magazine offers an in-depth look into how hosiery is evolving in the fashion world. For anyone serious about staying on top of legwear trends, *The Hosiery Times* is your ultimate guide.

2. Expert Insights You Won't Find Elsewhere

One of the greatest benefits of hosiery magazines is access to industry insiders. We don't just cover trends; we talk to the designers, fabric engineers, and business leaders who are shaping the future of hosiery. *The Hosiery Times* takes this a step further by offering exclusive interviews, behind-the-scenes insights, and expert commentary on the latest advancements in the hosiery sector. For retailers and manufacturers, this inside knowledge is crucial. Knowing what fabric technologies are on the horizon or which hosiery styles are set to dominate the upcoming season can give businesses a competitive edge. With expert reviews, technological spotlights, and trend forecasting, *The Hosiery Times* brings the hosiery industry into sharper focus, helping you make informed decisions whether you're on the selling or buying end of the spectrum.

3. Sustainability at the Forefront

In an era where fashion's environmental impact is under increasing scrutiny, the hosiery industry is stepping up. Sustainable fabrics, biodegradable materials, and eco-friendly production methods are

more than just buzzwords—they're becoming the norm. Hosiery brands are now experimenting with recycled fibers, organic cotton blends, and greener production practices to meet consumer demands for ethical fashion.

At The Hosiery Times, we're passionate about sustainability and make it a priority to spotlight brands that are leading the charge in this space. Our sustainability features not only highlight eco-friendly products but also dive deep into the environmental challenges the hosiery industry faces and the innovative solutions that are emerging. With every issue, we aim to inspire both consumers and industry leaders to make more sustainable choices.

4. Business Insights Tailored for the Hosiery Industry

While mainstream fashion magazines cater to a broad audience, hosiery magazines like *The Hosiery Times* focus on the niche needs of legwear enthusiasts and industry professionals. This makes us uniquely positioned to offer detailed market analyses, sales trends, and strategic business advice specifically for those working in the hosiery sector. Whether you're a small retailer trying to understand stocking trends for the winter season, or a large-scale manufacturer seeking to expand into international markets, our business insights section is designed to help. We offer comprehensive reports on market dynamics, product demand, and consumer behavior, giving our readers a roadmap to success in this competitive industry.

5. Hosiery for Every Season, Every Occasion

While legwear may be essential year-round, different seasons call

for different types of hosiery. Winter brings the need for thermal tights and cozy socks, while summer demands breathable, lightweight options. *The Hosiery Times* ensures you're always prepared by featuring seasonal styling guides, product recommendations, and care tips for your hosiery wardrobe. We understand that hosiery plays a role far beyond mere functionalityit's part of your overall style. Whether you're dressing up for a festive event, preparing for a business meeting, or layering for warmth during winter, *The Hosiery Times* provides expert styling advice to ensure your hosiery choices are always on point.

Why The Hosiery Times is Your Best Resource

At The Hosiery Times, we pride ourselves on being more than just a magazine—we are a community. Our publication is dedicated solely to hosiery, which means we delve deeper, explore further, and provide a more nuanced take on the trends, technologies, and innovations driving

the industry. Each issue is packed with carefully curated content, from the latest fashion forecasts to practical advice on how to care for your hosiery collection. Whether you're an industry professional or someone who simply loves great legwear, *The Hosiery Times* is your ultimate resource. We're committed to providing you with the most up-to-date information, exclusive content, and a fresh perspective on the role

hosiery plays in both fashion and everyday life.

A Magazine Like No Other

Hosiery may be the unsung hero of the fashion world, but it's an essential part of every wardrobe. And in an industry that's always evolving, The Hosiery Times is your key to staying ahead. We don't just report the news—we set the agenda. From trend analysis and expert interviews to sustainability spotlights and business insights, every page is designed to keep you informed and inspired. So whether you're a retailer, designer, or simply someone who loves wearing legwear, make sure you never miss an issue of the Hosiery Times. Your hosiery game will thank you!





2nd Floor, Shastri Nagar, Delhi-110052 Ph.: 011-23653834 E-mail: hosierytimes@gmail.com

Bank Draft / Crossed Cheque

in favour of **HOSIERY TIMES**

SUBSCRIBE

SUBSCRIPTION CHARGES: 1 YEAR 1500/- 3 YEARS 4000/- 5 YEARS 6500/-

For Online Payment Transfer / NEFT / REGTS

Name : HOSIERY TIMES A/c No. : 67043893597
Bank Name : State Bank of India IFSC Code : SBIN0070613

Branch : R.C. Complex, Sec.-8, Rohini, Delhi-110085

Complete your branding experience

Elegant packaging adds value to your customer's purchase





OFFSET PRINTING · CARD BOARD · CORRUGATED BOXES · UV PRINTING

PACKING BOX PRODUCTS

UNIT - I : L-136, Sector-1, DSIIDC Industrial Park, Bawana, Delhi-110 039 UNIT -II : Sector-B-2, Plot No. B-36, UPSIDC Ind. Area, Trans Delhi Signature City, Loni, Ghaziabad (U.P.) - 201103.

Ph.: +91 9312210787, 9582838349







FROM GREYS TO COLORFUL



THERMALS FOR

LARGEST RANGE OF THERMALS

From THINNEST to WARMEST • NEW BORNS to ADULTS **GREYS to COLORFUL • PLAINS to SELF DESIGNS**









Mkt. by: Bodycare International Ltd.

info@bodycareapparels.com | www.bodycareapparels.com

For trade enquiries, call us at: +91 11 46206000 (Timing: 10am-6pm) Mon to Fri

Send WhatsApp message "Hello" at +91 93117 14591 For franchise: retailhead@bodycareapparels.com









